गांधीजीकी कुछ अन्य पुस्तकें

अहिंसक समाजवादकी ओर	१.००
आरोग्यकी कुंजी	०.४४
खादी	२.००
खुराककी कमी और खेती	२.५०
गोसेवा	१.५०
दिल्ली-डायरी	३.००
नअी तालीमकी ओर	१.००
बापूकी कलमसे	२.५०
बापूके पत्र — २ : सरदार वल्लभभाअीके नाम	३.००
बापूके पत्र मीराके नाम	३.००
बुनियादी शिक्षा	१.५०
मगल-प्रभात	०.३७
यरवडाके अनुभव	१.००
रचनात्मक कार्यक्रम	०.३७
रामनाम	०.५०
विद्यार्थियोंसे	२.००
शिक्षाकी समस्या	२.५०
सच्ची शिक्षा	२.००
सत्यके प्रयोग अथवा आत्मकथा	१.५०
सत्य ही अीश्वर है	०.८०
सत्याग्रह आश्रमका अितिहास	१.२५
सर्वोदय	२ ००
हमारे गावोंका पुनर्निर्माण	१.५०
हरिजनसेवकोंके लिअे	०.३७
हिन्द स्वराज्य	०.७०

समाजमें स्त्रियोंका स्थान और कार्य

गांधीजी

नवजीवन प्रकाशन मंदिर
अहमदाबाद-१४

गांधीजीकी कुछ अन्य पुस्तकें

अहिंसक समाजवादकी ओर	१.००
आरोग्यकी कुंजी	०.४४
खादी	२.००
खुराककी कमी और खेती	२.५०
गोसेवा	१.५०
दिल्ली-डायरी	३.००
नभी तालीमकी ओर	१.००
बापूकी कलमसे	२.५०
बापूके पत्र —२ : सरदार वल्लभभाईके नाम	३.००
बापूके पत्र मीराके नाम	३.००
बुनियादी शिक्षा	१.५०
मगल-प्रभात	०.३७
यरवडाके अनुभव	१.००
रचनात्मक कार्यक्रम	०.३७
रामनाम	०.५०
विद्यार्थियोंसे	२.००
शिक्षाकी समस्या	२.५०
सच्ची शिक्षा	२.००
सत्यके प्रयोग अथवा आत्मकथा	१.५०
	०.८०
	१.२५
	२.००

समाजमें स्त्रीका स्थान और कार्य

गांधीजी

संपादक
आर० के० प्रभु

नवजीवन प्रकाशन मंदिर
अहमदाबाद-१४

अनुक्रमणिका

१

समाजमें स्त्रीका स्थान और कार्य

मेरी अपनी राय तो यह है कि जैसे मूलमें स्त्री और पुरुष अेक हैं, ठीक अुसी तरह अुनकी समस्या भी मूलमें अेक ही होनी चाहिये। दोनोंमें अेक ही आत्मा विराजमान है। दोनो अेक ही प्रकारका जीवन बिताते हैं। दोनोंकी अेकसी ही भावनायें हैं। दोनो अेक-दूसरेके पूरक हैं। अेककी सक्रिय सहायताके बिना दूसरा जी ही नहीं सकता।

मगर किसी न किसी तरह अनन्त कालसे स्त्री पर पुरुषने आधिपत्य जमा रखा है। अिस कारण स्त्रीमें अपनेको हीन समझनेकी मनोवृत्ति आ गअी है। पुरुषने स्वार्थवश स्त्रीको सिखाया है कि वह अुससे नीचे दरजेकी है और स्त्रीने अिस शिक्षाको सच्चा मान लिया है। मगर ज्ञानी पुरुषोंने स्त्रीका दरजा बराबरका ही माना है।

फिर भी अिसमें शक नहीं कि अेक जगह पहुंचकर दोनोंके काम अलग-अलग हो जाते हैं। जहां यह बात सच है कि मूलमें दोनों अेक हैं, वहां यह भी अुतना ही सच है कि दोनोंकी शरीर-रचना अेक-दूसरेसे भिन्न है। अिसलिअे दोनोंका काम भी अलग-अलग ही होना चाहिये। मातृत्वका धर्म अैसा है, जिसे अधिकांश स्त्रियां सदा ही धारण करती रहेंगी। लेकिन अुसके लिअे जिन गुणोंकी आवश्यकता है, अुन गुणोंका पुरुषोंमें होना जरूरी नहीं है। स्त्री सहनेवाली है, पुरुष करनेवाला है। स्त्री स्वभावसे घरकी मालकिन है, पुरुष कमानेवाला है। स्त्री कमाअीकी रक्षा करती है और अुसे बांटती है। वह हरअेक अर्थमें परिवारकी पालिका है। मानव-जातिके दुधमुहे बच्चोंको पाल-पोसकर बड़ा करनेकी कला अुसीका विशेष धर्म और अेकमात्र अधिकार है। वह सभाल न रखे तो मानव-जाति ससारसे नष्ट हो जाय।

मेरी रायमें अिसमें स्त्री और पुरुष दोनोंका पतन है कि स्त्रीको घर छोड़कर घरकी रक्षाके लिअे बन्दूक अुठानेको कहा या समझाया

जाय। यह तो फिरसे जंगली बनना और नाशका आरं
हुआ। जिस घोडे पर पुरुष सवार होता है अुसी पर
चढनेकी कोशिश करती है, तो वह दोनोंको गिराती है। पु
जीवन-संगिनीको भय या प्रलोभन दिखाकर अुसका खास काम
तो अिसका पाप पुरुषके ही सिर होगा। वीरता जितनी बा
अपने घरको बचानेमें है, अुतनी ही अुसे भीतरसे स्वच्छ और
रखनेमें है।

व्यक्तियोंके लिअे या राष्ट्रोंके लिअे, 'मेरी मदद
समस्याको हल करनेमें यह रही है कि मैंने जीवनके हर
और अहिंसाको मान लेने पर जोर दिया है। मैंने यह
रखी है कि अिस प्रयत्नमें स्त्री ही समाजका नेतृत्व करेगी
वह मानव-विकासमें अपना अुचित स्थान पा लेगी तब व
हीन समझना छोड देगी। अगर अैसा करनेमें अुसे सफ
तो अुसे आजकलकी अिस शिक्षाको माननेसे दृढतापूर्वक
देना चाहिये कि हर बात कामवृत्तिसे ही निर्धारित औ
होती है। मुझे डर है कि मैंने अिस सवालको जरा भद्दे
दिया है। लेकिन मुझे अुम्मीद है कि मेरा मतलब स
नहीं जानता कि जो लाखों लोग लडाअीमें जूझ रहे हैं अ
वासनाका भूत सवार है। जो किसान मिल-जुलकर
करते हैं अुन्हें भी वह नहीं सताती, न अुन पर हावी है
कहनेका यह अर्थ नहीं कि कुदरतने पुरुष और स्त्रीमें
जो बीज रख छोडा है अुससे वे अछूते हैं। लेकिन अिस
नहीं कि अुनके जीवन पर अिसका अितना राज्य नहीं है
लोगोंके जीवन पर है, जो कामवृत्तिकी चर्चा करनेवाले
साहित्यको पढनेमें डूबे रहते हैं। स्त्री हो या पुरुष, जब
कठोर सचाअीके साथ जूझना पडता है तब अुसे अिन
समय ही कहाँ मिलता है?

मैंने कहा है . . . कि स्त्री अहिंसाकी जीती-जा
हिंसाका अर्थ है असीम प्रेम; और असीम प्रेमका

सहनेकी अपार शक्ति। पुरुषकी जननी स्त्रीके सिवा और किसमें यह शक्ति ज्यादासे ज्यादा प्रकट होती है? यह शक्ति स्त्री अुस वक्त प्रगट करती है जब वह नौ महीने तक बच्चेको पेटमें रखती है, अुसका पोषण करती है और अुसमें जो कष्ट होता है अुससे आनन्द अनुभव करती है। प्रसूतिकी पीड़ासे अधिक और क्या पीड़ा हो सकती है? लेकिन नवसर्जनकी खुशीमें वह सब कुछ भूल जाती है। अिस खयालसे कि मेरा बच्चा दिनोंदिन बड़ा हो, रोजकी मुसीबत कौन झेलता है? अपना यह प्रेम स्त्री सारी मानव-जातिको दे दे, और यह भूल जाय कि वह कभी भी पुरुषके भोगकी चीज थी या भविष्यमें हो सकती है, तो अुसे पुरुषकी माता, अुसकी निर्मात्री और अुसकी मूक पथदर्शिकाका गौरवपूर्ण पद प्राप्त हो जायगा। युद्धमें फंसी हुअी दुनिया शान्तिके अमृतकी प्यासी है। अुसे शान्तिकी कला सिखानेका काम स्त्रीका ही है।

हरिजन, २४-२-'४०

२

पुरुष और स्त्रीकी समानता

कानून बनानेका कार्य अधिकतर पुरुषोंके हाथमें रहा है। और पुरुषने स्वयं ही अपने हाथमें जो कार्य ले लिया है, अुसे पूरा करनेमें अुसने सदा न्याय और विवेकका पालन नहीं किया है। स्त्रियोंके पुनरुद्धारकी दिशामें हमारी सबसे बड़ी कोशिश स्त्रियों पर लगाये गये अुन आक्षेपों और दोषोंको दूर करनेकी होनी चाहिये, जिन्हें हमारे शास्त्रोंमें अुनके स्वभाव-सिद्ध और अनिवार्य लक्षण बताया गया है। यह काम कौन करेगा और कैसे करेगा? मेरी नम्र रायमें यह कोशिश करनेके लिअे हमें सीता, दमयन्ती और द्रौपदीके जैसी पवित्र, दृढ़ और संयमशाली महिला पैदा करनी होगी। अगर हम अुन्हें पैदा कर लेते हैं तो हमारी आजकलकी अिन बहनोंको भी हिन्दू समाजकी तरफसे वही आदर और प्रतिष्ठा प्राप्त होगी, जो प्राचीन

कालकी अुनकी बहनोंको मिलती रही है। अुनके वचन अुतने ही प्रमाणभूत माने जायगे जितने शास्त्रोंके। तब स्मृतियों आदिमें स्त्री-जाति पर कहीं कहीं जो कटाक्ष किये गये हैं, अुनके लिअे हम लज्जित होंगे और हम अुन्हें जल्दी भूल जायगे। अिस तरहकी क्रांतियां हिन्दू धर्ममें पहले भी हुअी हैं और आगे भी होंगी, और अिससे हमारा धर्म स्थिर और दृढ बनेगा।

• स्त्री पुरुषकी सहचरी है। अुसकी मानसिक शक्तियां पुरुषसे जरा भी कम नहीं हैं। अुसे पुरुषके छोटेसे छोटे कामोंमें हाथ बटानेका अधिकार है और आजादीका अुसे अुतना ही अधिकार है जितना पुरुषको। अपने क्षेत्रमें अुसकी सर्वोच्चता अुसी प्रकार स्वीकार की जानी चाहिये, जिस प्रकार पुरुषकी अुसके क्षेत्रमें। यह तो स्वाभाविक स्थिति होनी चाहिये, न कि लिखना-पढना सीखनेका परिणाम। केवल बुरे रिवाजके जोर पर जाहिलसे जाहिल और निकम्मेसे निकम्मे पुरुषोंको स्त्रियों पर सरदारी मिली हुअी है, जिसके वे अधिकारी नहीं हैं और जो अुन्हें मिलनी नहीं चाहिये। हमारी स्त्रियोंकी दुर्दशाके कारण हमारे बहुतसे आन्दोलन अधूरे रह जाते हैं। हमारे बहुतेरे कामोंका ठीक नतीजा नहीं निकलता। हमारी हालत 'अशर्फियां लुटें और कोयले पर मुहर' की नीति पर चलनेवाले व्यापारी जैसी है, जो अपने व्यापारमें काफी पूंजी नहीं लगाता।

स्पीचेज़ अेण्ड राअिटिंग्ज़ ऑफ महात्मा गांधी, पृ० ४२४-२५

जिस रूढि और कानूनके बनानेमें स्त्रीका कोअी हाथ नहीं था और जिनके लिअे सिर्फ पुरुष ही जिम्मेदार है, अुस कानून और रूढिके जुल्मोंने स्त्रीको लगातार कुचला है। अहिंसाकी नींव पर रचे गये जीवनकी योजनामें जितना और जैसा अधिकार पुरुषको अपने भविष्यकी रचनाका है, अुतना और वैसा ही अधिकार स्त्रीको भी अपना भविष्य तय करनेका है। लेकिन अहिंसक समाजकी व्यवस्थामें जो अधिकार मिलते हैं, वे किसी न किसी कर्तव्य या धर्मके पालनसे प्राप्त होते हैं। अिसलिअे यह भी मानना चाहिये कि सामाजिक

आचार-व्यवहारके नियम स्त्री और पुरुष दोनों आपसमें मिलकर और राजी-खुशीसे तय करें। अिन नियमोंका पालन करनेके लिअे बाहरकी किसी सत्ता या हुकूमतकी जबरदस्ती काम नहीं देगी। स्त्रियोंके साथ अपने व्यवहारमें पुरुषोंने अिस सत्यको पूरी तरह पहचाना नहीं है। स्त्रीको अपना मित्र या साथी माननेके बदले पुरुषने अपनेको अुसका स्वामी माना है। पुराने जमानेका गुलाम नहीं जानता था कि अुसे आजाद होना है, या कि वह आजाद हो सकता है। स्त्रियोंकी हालत भी आज कुछ अैसी ही है। जब अुस गुलामको आजादी मिली तो कुछ समय तक अुसे अैसा मालूम हुआ, मानो अुसका सहारा ही जाता रहा। स्त्रियोंको यह सिखाया गया है कि वे अपनेको पुरुषोंकी दासी समझें। अिसलिअे कांग्रेसवालोंका यह फर्ज है कि वे स्त्रियोंको *अुनकी मौलिक स्थितिका पूरा बोध करावें और अुन्हें अिस तरहकी* तालीम दें, जिससे वे जीवनमें पुरुषोंके साथ बराबरीके दरजेसे हाथ बटाने लायक बनें।

रचनात्मक कार्यक्रम, पृ० ३२-३३

मैं स्त्रियोंके अधिकारोंके मामलेमें कोअी समझौता स्वीकार नहीं कर सकता। मेरी रायमें कानूनकी तरफसे स्त्रीके लिअे अैसी कोअी रुकावट नहीं होनी चाहिये जो पुरुषके लिअे नहीं है। मैं लड़कों और लड़कियोंके साथ बिल्कुल बराबरीके दरजेका बरताव चाहूंगा।

यंग अिंडिया, १७-१०-'२९

स्त्री-पुरुषकी समानताका अर्थ यह नहीं है कि अुनके धंधे भी अेक ही हों। कोअी स्त्री शिकार खेले या भाला चलाये, तो कानून अुसे मना नहीं कर सकता। लेकिन जो काम पुरुषका है अुससे वह सहज ही झिझकती है। प्रकृतिने स्त्री-पुरुषको अेक-दूसरेका पूरक बनाया है। जैसे अुनके शरीर अलग-अलग हैं, वैसे ही अुनके काम भी अलग अलग हैं।

हरिजन, २-१२-'३९

कालकी अुनकी बहनोंको मिलती रही है। अुनके वचन अुतने ही प्रमाणभूत माने जायगे जितने शास्त्रोंके। तब स्मृतियों आदिमें स्त्री-जाति पर कहीं कहीं जो कटाक्ष किये गये हैं, अुनके लिअे हम लज्जित होंगे और हम अुन्हे जल्दी भूल जायगे। अिस तरहकी क्रांतिया हिन्दू धर्ममें पहले भी हुअी हैं और आगे भी होंगी, और अिससे हमारा धर्म स्थिर और दृढ बनेगा।

• स्त्री पुरुषकी सहचरी है। अुसकी मानसिक शक्तिया पुरुषसे जरा भी कम नही हैं। अुसे पुरुषके छोटेसे छोटे कामोंमें हाथ बटानेका अधिकार है और आजादीका अुसे अुतना ही अधिकार है जितना पुरुषको। अपने क्षेत्रमें अुसकी सर्वोच्चता अुसी प्रकार स्वीकार की जानी चाहिये, जिस प्रकार पुरुषकी अुसके क्षेत्रमें। यह तो स्वाभाविक स्थिति होनी चाहिये, न कि लिखना-पढना सीखनेका परिणाम। केवल बुरे रिवाजके जोर पर जाहिलसे जाहिल और निकम्मेसे निकम्मे पुरुषोंको स्त्रियों पर सरदारी मिली हुअी है, जिसके वे अधिकारी नही हैं और जो अुन्हे मिलनी नही चाहिये। हमारी स्त्रियोंकी दुर्दशाके कारण हमारे बहुतसे आन्दोलन अधूरे रह जाते हैं। हमारे बहुतेरे कामोंका ठीक नतीजा नही निकलता। हमारी हालत 'अशर्फिया लूटें और कोयले पर मुहर' की नीति पर चलनेवाले व्यापारी जैसी है, जो अपने व्यापारमें काफी पूजी नही लगाता।

स्पीचेज़ अेण्ड राअिटिंग्ज़ ऑफ महात्मा गाधी, पृ० ४२४–२५

जिस रूढ़ि और कानूनके बनानेमें स्त्रीका कोअी हाथ नहीं था और जिसके लिअे सिर्फ पुरुष ही जिम्मेदार है, अुस कानून और रूढ़िके जुल्मोंने स्त्रीको लगातार कुचला है। अहिंसाकी नींव पर रचे गये जीवनकी योजनामें जितना और जैसा अधिकार पुरुषको अपने भविष्यकी रचनाका है, अुतना और वैसा ही अधिकार स्त्रीको भी अपना भविष्य तय करनेका है। लेकिन अहिंसक समाजकी व्यवस्थामें जो अधिकार मिलते हैं, वे किसी न किसी कर्तव्य या धर्मके पालनसे प्राप्त होते हैं। अिसलिअे य[illegible] सामाजिक

आम स्त्री और पुरुष दोनो आपसमें मिलकर और राजी-खुशीसे तय करें। अिन नियमोंका पालन करनेके लिअे बाहरकी किसी सत्ता या हुकूमतकी जबरदस्ती काम नहीं देगी। स्त्रियोंके साथ अपने व्यवहारमें पुरुषोंने अिस सत्यको पूरी तरह पहचाना नहीं है। स्त्रीको अपना मित्र या साथी माननेके बदले पुरुषने अपनेको अुसका स्वामी माना है। पुराने जमानेका गुलाम नहीं जानता था कि अुसे आजाद होना है, या कि वह आजाद हो सकता है। स्त्रियोंकी हालत भी आज कुछ अैसी ही है। जब अुस गुलामको आजादी मिली तो कुछ समय तक अुसे अैसा मालूम हुआ, मानो अुसका सहारा ही जाता रहा। स्त्रियोंको यह सिखाया गया है कि वे अपनेको पुरुषोंकी दासी समझें। अिसलिअे कांग्रेसवालोंका यह फर्ज है कि वे स्त्रियोंको अुनकी मौलिक स्थितिका पूरा बोध करावें और अुन्हें अिस तरहकी तालीम दें, जिससे वे जीवनमें पुरुषोंके साथ बराबरीके दरजेसे हाथ बटाने लायक बनें।

रचनात्मक कार्यक्रम, पृ० ३२–३३

मैं स्त्रियोंके अधिकारोंके मामलेमें कोअी समझौता स्वीकार नहीं कर सकता। मेरी रायमें कानूनकी तरफसे स्त्रीके लिअे अैसी कोअी रुकावट नहीं होनी चाहिये जो पुरुषके लिअे नहीं है। मैं लड़कों और लड़कियोंके साथ बिलकुल बराबरीके दरजेका बरताव चाहूंगा।

यंग अिंडिया, १७–१०–'२९

स्त्री-पुरुषकी समानताका अर्थ यह नहीं है कि अुनके धंधे भी अेक ही हों। कोअी स्त्री शिकार खेले या भाला चलाये, तो कानून अुसे मना नहीं कर सकता। लेकिन जो काम पुरुषका है अुससे वह सहज ही झिझकती है। प्रकृतिने स्त्री-पुरुषको अेक-दूसरेका पूरक बनाया है। जैसे अुनके शरीर अलग-अलग है, वैसे ही अुनके काम भी अलग अलग हैं।

३

स्त्री अबला नहीं है

अिस मनुष्य-जातिने यों तो संसारके अनेक पापों और बुराअियोंके लिअे अपनेको जवाबदेह बनाया है। परन्तु अुन सबमें कोअी भी पाप अितना नीचे गिरानेवाला, दिलको दहलानेवाला और हैवानियतसे भरा हुआ नहीं है, जितना कि अुसके द्वारा किया हुआ स्त्रीजातिका दुरुपयोग है। स्त्रीको मैं देवी समझता हूं, अबला नहीं। स्त्री आज भी बलिदान, कष्ट-सहन, नम्रता, श्रद्धा और ज्ञानकी प्रतिमा है, और अिसलिअे स्त्री-पुरुष दोनोंमें अेकमात्र स्त्री ही अधिक अुच्च और श्रेष्ठ है। •

हिन्दी नवजीवन, २३-९-'२१

कानून बनानेवाला होनेके कारण पुरुषने अबला कहलानेवाली स्त्रीजाति पर जो पतन लादा है अुसके लिअे अुसे भयंकर दण्ड भोगना पड़ेगा। जब पुरुषके फंदेसे छूटकर स्त्री पूर्ण अुच्चताको प्राप्त करेगी और पुरुषके बनाये हुअे कानूनों और संस्थाओंके खिलाफ विद्रोह करेगी, तब अुसका विद्रोह होगा तो बेशक अहिंसक ही, मगर वह कम सफल नहीं होगा।

यंग अिंडिया, १६-४-'२५

अगर मैं स्त्रीका जन्म पाअूं, तो मैं पुरुषकी अिस झूठी धारणाके खिलाफ बगावत कर दूं कि स्त्री अुसका खिलौना बननेको पैदा हुअी है।

यंग अिंडिया, ८-१२-'२७

• स्त्रीको अबला कहना अुसकी मानहानि करना है, यह पुरुषका स्त्रीके प्रति घोर अन्याय है। यदि बलका अर्थ पशुबल है, तो बेशक स्त्री पुरुषसे कमजोर है, क्योंकि अुसमें पशुता कम है। लेकिन अगर

दलका अर्थ नैतिक बल है, तो स्त्री पुरुषसे अनन्त गुनी अूची है। क्या अुसकी सहज-बोधकी शक्ति पुरुषसे अधिक नहीं है? क्या अुसकी त्याग-शक्ति पुरुषसे ज्यादा नहीं है? क्या अुसकी सहिष्णुता और अुसका साहस पुरुषको पीछे नहीं छोड देते? अुसके बिना पुरुषकी हस्ती ही सम्भव नहीं हो सकती थी। अगर अहिंसा हमारे जीवनका धर्म है, तो भविष्य स्त्रीके हाथमें है। ... अैसा कौन है जो स्त्रीसे अधिक प्रभावशाली रूपमें मनुष्यके हृदयसे अपील कर सकता है।

यंग अिंडिया, १०–४–'३०

अगर पुरुषने अपने अंधे स्वार्थके वश होकर स्त्रीकी आत्माको कुचल न दिया होता, जैसा कि अुसने किया है, या स्त्री 'भोगों' के आगे झुक न जाती, तो वह दुनियाके सामने अपने भीतरकी अपार शक्ति प्रगट कर सकी होती।

यंग अिंडिया, ७–५–'३१

मेरी रायमें स्त्री आत्मत्यागकी मूर्ति है, लेकिन दुर्भाग्यसे वह आज यह महसूस नहीं करती कि अुसे अिस क्षेत्रमें पुरुषसे कितनी बड़ी अनुकूलता है। जैसा टॉल्स्टॉय कहा करते थे, स्त्रियां पुरुषके जादुअी प्रभावमें फंसकर दुःख भोग रही हैं। यदि वे अहिंसाकी शक्तिको पहचान लें, तो वे अबला कहलाना कभी पसन्द नहीं करेंगी।

यंग अिंडिया, १४–१–'३२

स्त्रियां जीवनमें जो कुछ शुद्ध और धार्मिक है अुस सबकी विशेष संरक्षिकायें हैं। स्वभावसे रक्षणशील होनेके कारण यदि वे अंध-विश्वासोंको छोड़नेमें धीमी हैं, तो जीवनमें जो कुछ शुद्ध और अुदात्त है अुसे सबको छोड़नेमें भी वे अुतनी ही धीमी हैं।

हरिजन, २५–३–'३३

पुरुषने स्त्रीको अपनी कठपुतली माना है, स्त्रीने पुरुषकी कठपुतली बनना सीखा है और आखिरमें असा बनना अुसे आसान और सुखद

मालूम हुआ है। क्योंकि जब गिरनेवाला व्यक्ति दूसरेको जबरन अपने साथ खींचता है तो पतन आसान होता है।

हरिजन, २५-१-'३६

४

स्त्रीका कार्यक्षेत्र

मैं अिस बातकी कल्पना नहीं करता कि पत्नी नियमके तौर पर अपने पतिसे स्वतंत्र रूपमें कोअी धन्धा करेगी। बालकोंका पालन-पोषण तथा घरबारकी व्यवस्था अैसे काम हैं, जिनमें लगभग अुसकी सारी शक्ति लग सकती है। अेक सुव्यवस्थित समाजमें परिवारके भरण-पोषणका अतिरिक्त बोझ पत्नीके सिर पर नहीं पड़ना चाहिये। परिवारके भरण-पोषणकी व्यवस्था पुरुषको ही करनी चाहिये; स्त्रीको अपनी गृहस्थीकी व्यवस्था करनी चाहिये। अिस प्रकार पति और पत्नीको अेक-दूसरेके श्रमका पूरक बनना चाहिये।

हरिजन, १२-१०-'३४

मेरी कल्पनामें समाजकी जो नअी व्यवस्था है, अुसके अनुसार सभी अपनी-अपनी शक्तिके अनुसार काम करेंगे और अुन्हें अपनी मेहनतका पूरा बदला मिलेगा। अुस नअी व्यवस्थामें स्त्रियां थोड़े समयके लिअे श्रम करेंगी, क्योंकि अुनका मुख्य काम घरकी देखभाल करना होगा। चूंकि मैं नहीं समझता कि बन्दूकके लिअे नअी समाज-व्यवस्थामें स्थायी जगह होगी, अिसलिअे पुरुषोंके जीवनमें भी बन्दूकका अुपयोग धीरे-धीरे कम किया जायगा। और जब तक अुसका अुपयोग होता रहेगा तब तक भी अुसे अेक जरूरी बुराअी समझ कर ही सहन किया जायगा। पर मैं जान-बूझकर अिस बुराअीको छूत स्त्रियोंको लगने दूंगा।

" ", १६-३-'४०

ज्यादातर तो स्त्रीका समय घरके जरूरी कामकाज करनेमें नहीं लगता, बल्कि अपने पतिके अहंकारपूर्ण सुखकी और अपने मिथ्याभिमानकी पूर्तिमें ही खर्च होता है। मेरे खयालसे स्त्रियोंकी यह घरके भीतरकी गुलामी हमारे जंगलीपनकी निशानी है। अब समय आ गया है कि हमारी स्त्रियां अिस जुअेसे मुक्त कर दी जाय। घरके काममें स्त्रियोंका सारा वक्त खर्च नहीं हो जाना चाहिये।

स्त्रियां और अुनकी समस्यायें, पृ० २९

आजकल बहुत कम स्त्रियां राजनीतिमें हिस्सा लेती हैं, और जो लेती हैं अुनमें से अधिकांश स्वतंत्र विचार नहीं करतीं। जैसा माता-पिता या पति कहते हैं वैसा ही वे करती हैं। फिर पराधीनता महसूस करके वे स्त्रियां स्त्री हकोंकी पुकार मचाती हैं। अिसके बदले कार्यकर्त्रियां तमाम स्त्रियोंके नाम मतदाताओंकी सूचीमें दरज करा दें, अुनको व्यावहारिक शिक्षा दें या दिलायें, अुन्हें स्वतंत्र रीतिसे विचार करना सिखायें, अुन्हें जात-पातकी जंजीरोंसे छुड़ायें और अैसी हालत पैदा कर दें जिससे पुरुष ही अुनकी शक्ति और अुनके त्यागको पहचानकर अुन्हें आगे बढ़ायें। अगर कार्यकर्त्रियां अितना करें तो वे आजके गन्दे वातावरणको शुद्ध कर देंगी।

हरिजनसेवक, २१-४-'४६

५
स्त्रियोंकी शिक्षा

स्त्री और पुरुषका दरजा समान है, पर वे अेक नहीं हैं। वे अैसी अनुपम जोड़ी हैं जिसमें प्रत्येक दूसरेका पूरक है। वे अेक-दूसरेके लिअे आवश्यक हैं — यहां तक कि अेकके बिना दूसरेकी हस्तीकी कल्पना ही नहीं की जा सकती। अिन तथ्योंसे यह अवश्य निष्कर्ष निकलता है कि जिस बातसे दोनोंमें से अेकका भी दरजा घटेगा, अुससे दोनोंकी अेकसी बरबादी होगी। स्त्री-शिक्षाकी योजना बनाते वक्त

अिस बुनियादी सचाअीको सदा ध्यानमें रखना चाहिये कि स्त्री और पुरुष अेक-दूसरेके पूरक हैं। दम्पतीके बाहरी कार्योंमें पुरुषका दरजा अूंचा है, अिसलिअे यह ठीक ही है कि अुसे अुन कार्योंकी ज्यादा जानकारी होनी चाहिये। दूसरी तरफ घरेलू जीवन पूरी तरह स्त्रीका ही क्षेत्र है, अिसलिअे घरके मामलोंमें, बच्चोंके पालन-पोषण और शिक्षणके बारेमें स्त्रीको ज्यादा ज्ञान होना चाहिये। किसी खास तरहके ज्ञानका दरवाजा किसी अेकके लिअे बन्द कर दिया जाय अैसी बात नहीं होनी चाहिये, लेकिन जब तक पाठ्यक्रम अिन बुनियादी सिद्धान्तोंको विवेकके साथ समझकर नहीं बनाया जायगा, तब तक स्त्री और पुरुषके जीवनका पूरा पूरा विकास नहीं हो सकेगा।

स्त्रिया और अुनकी समस्यायें, पृ० ५, १५

स्त्रियोंको अुपयुक्त शिक्षा मिलनी चाहिये यह मैं मानता हू। लेकिन अिसके साथ ही मैं यह भी मानता हू कि पुरुषकी नकल करके या अुसके साथ स्पर्धा करके स्त्री दुनियाको अपनी कोअी खास देन नहीं दे सकेगी। वह पुरुषके साथ दौड़ तो सकेगी, लेकिन पुरुषकी नकल करनेसे वह अुस अूंचाअी तक नहीं पहुच पायेगी जहा पहुचनेकी अुसमें शक्ति है। स्त्रीको तो पुरुषकी सहायक या पूरक बनना चाहिये; जो काम पुरुष न कर सके वह अुसे करना चाहिये।

हरिजनसेवक, ६-३-'३७

अंग्रेजीकी शिक्षा

लड़कियोंको तो अिसीलिअे अंग्रेजी पढ़ाअी जाती है कि अिससे अुन्हें अच्छा वर मिल जायगा। मैं अैसी कअी मिसालें जानता हूं, जिनमें स्त्रिया अिसलिअे अंग्रेजी पढ़ना चाहती हैं कि अंग्रेजोंके साथ अंग्रेजीमें बोल सकें! मैंने अैसे कितने ही पति देखे हैं जिनकी स्त्रिया अुनके साथ या अुनके दोस्तोंके साथ अंग्रेजीमें न बोल सकें तो अुन्हें दुःख होता है। मैं अैसे कुटुम्बोंको भी जानता हू, जिनमें अंग्रेजी भाषाको मातृभाषा लिया जाता है! . . . अिस बुराअीने समाजमें अितना घर कर

लिखा है कि बहुतसे अुदाहरणोंमें शिक्षाका अर्थ अंग्रेजी भाषाके ज्ञानके सिवा और कुछ होता ही नहीं। मेरे खयालसे तो ये सब हमारी गुलामी और गिरावटकी निशानियां हैं। आज जिस तरह देशी भाषाओंकी अुपेक्षा की जाती है और अुनके विद्वान व लेखकोंको रोटीके लाले पड़ रहे हैं वह मुझसे देखा नहीं जाता। मां-बाप अपने बच्चोंको और पति अपनी स्त्रीको अपनी भाषाको छोड़कर अंग्रेजीमें पत्र लिखें, तो वह मुझसे कैसे बरदाश्त हो सकता है?

यंग अिंडिया, १-६-'२१

सहशिक्षा

मैं अभी तक निश्चयपूर्वक यह नहीं कह सकता कि सहशिक्षा सफल होगी या नहीं होगी। पश्चिममें वह सफल हुअी है अैसा नहीं लगता। बरसों पहले मैंने खुद अुसका प्रयोग किया था। और वह भी अिस हद तक कि लड़कों और लड़कियोंको मैं अेक ही बरामदेमें सुलाता था। अुनके बीचमें कोअी आड़ नहीं होती थी, अलबत्ता मैं और मेरी पत्नी अुनके साथ अुसी बरामदेमें सोते थे। मुझे यह कहना चाहिये कि *अिस प्रयोगके परिणाम अच्छे नहीं आये।*

. . . सहशिक्षा अभी प्रयोगकी ही अवस्थामें है और अुसके परिणामोंके पक्षमें अथवा विपक्षमें निश्चयपूर्वक कुछ भी नहीं कहा जा सकता। मेरा खयाल है कि अिस दिशामें हमें आरंभ सबसे पहले परिवारसे करना चाहिये। परिवारमें लड़के-लड़कियोंको साथ-साथ स्वाभाविक तौर पर और आजादीके वातावरणमें बढ़ने देना चाहिये। अिस तरह सहशिक्षा अपने-आप आ जायेगी।

अमृतबाजार पत्रिका, १२-१-'३५

६

विवाहका आदर्श

अगर विवाह कोअी धर्मकृत्य है, जैसा कि अुसे होना चाहिये, नये जीवनमें प्रवेश करना है, तो लड़कियोंका विवाह अुनका पूरा विकास होने पर ही होना चाहिये। अपना जीवन-भरका साथी चुननेमें अुनका भी कुछ हाथ रहना चाहिये और अुन्हें मालूम होना चाहिये कि वे जो कुछ कर रही हैं अुसके क्या फल होंगे।

यंग अिंडिया, १९–८–'२६

विवाहको अेक धार्मिक सस्कार मानना चाहिये, जो पति-पत्नी पर यह सयम लगाता है कि वे केवल अपने बीच ही संभोग कर सकते हैं, केवल प्रजोत्पत्तिके लिअे ही संभोग कर सकते हैं और वह भी तभी जब पति-पत्नी दोनों अैसी अिच्छा रखते हों और अुसके लिअे तैयार हों।

यंग अिंडिया, १६–९–'२६

मेरी दृष्टिमें विवाहित जीवन वैसी ही साधनाकी अवस्था है जैसी कोअी दूसरी। जीवन अेक कर्तव्य है, अेक कसौटी है। विवाहित जीवनका अुद्देश्य अिस लोक और परलोक दोनोंमें अेक-दूसरेका कल्याण करना है। अिसका ध्येय मानव-जातिकी सेवा करना भी है। जब अेक साथी अनुशासनका नियम भंग करता है, तब दूसरेको बन्धन तोड़नेका अधिकार प्राप्त हो जाता है। यहां तोड़नेका नैतिक अर्थ लेना है, शारीरिक नहीं। अिसमें तलाककी मनाही है। पति या पत्नी अलग हो जाते हैं, मगर होते हैं अुसी हेतुको पूरा करनेके लिअे जिसके खातिर अुनका मेल हुआ था। हिन्दू धर्ममें दोनोंको बिलकुल बराबरीका माना गया है। अिसमें शक नहीं कि व्यवहार दूसरी तरहका चल पड़ा है। जाने अैसा कबसे हुआ? अिसी तरहकी और भी अनेक

बुराअियां अुसमें घुस गयी हैं। लेकिन अितना मुझे जरूर पता है कि हिन्दू धर्ममें व्यक्तिको अितनी पूरी छूट दी गयी है कि वह आत्मज्ञानके लिअे चाहे जो करे, क्योंकि मनुष्य-जन्म आत्मज्ञानके लिअे ही होता है।

यंग अिंडिया, २१-१०-'२६

विवाहका आदर्श यह है कि शरीरोंके जरिये आत्माओंका मिलाप हो। जिससे जिस मानवीय प्रेमको मूर्तरूप मिलता है अुसका अुद्देश्य यह है कि वह दैवी या विश्वप्रेमके लिअे सीढ़ीका काम दे।

यंग अिंडिया, २१-५-'३१

विवाहके चुनावमें आध्यात्मिक अुन्नतिको प्रथम स्थान देना चाहिये। समाज और देशसेवाको दूसरा स्थान दिया जाय। कौटुम्बिक और व्यावहारिक सुविधाको तीसरा। पारस्परिक आकर्षण और प्रेमको चौथा। अिसका अर्थ यह हुआ कि जिस जगह अिन तीन प्रथम शर्तोंका अभाव हो, वहां पारस्परिक 'प्रेम' को स्थान नहीं मिल सकता। अगर प्रेमको प्रथम स्थान दिया जाय, तो वह सर्वोपरि बनकर दूसरोंकी अवगणना कर सकता है और करता है, अैसा आजकलके व्यवहारमें देखनेमें आता है। प्राचीन और अर्वाचीन अुपन्यासोंमें भी यह पाया जाता है। अिसलिअे यह कहना होगा कि अुपर्युक्त तीन शर्तोंका पालन होते हुअे भी जहां पारस्परिक आकर्षण नहीं है वहां विवाह त्याज्य है। अच्छी सन्तान पैदा करनेकी क्षमताको शर्त न माना जाय। क्योंकि यही अेक वस्तु विवाहका मुख्य कारण है, वह केवल विवाहकी शर्त नहीं है।

हरिजनसेवक, १५-५-'३७

काम-वासनाको पूरा करनेके लिअे किया हुआ विवाह वास्तवमें *विवाह नहीं है। वह व्यभिचार है।*

हरिजन, २४-४-'३७

सचमुच तो विवाहका मतलब पुरुष और स्त्रीकी गाढ़ी मित्रता होना चाहिये, और है भी। अुसमें विषय-भोगको तो जगह है ही नहीं। जिस विवाहमें विषय-भोगको जगह है, वह सच्चा विवाह ही नहीं है, सच्ची मित्रता ही नहीं है।

हरिजनसेवक, ७–७–'४६

जीवनमें विवाह अेक कुदरती चीज है। और अिसे किसी भी तरह नीचे गिरानेवाली बात समझना बिल्कुल गलत है।... आदर्श यह है कि विवाहको अेक धार्मिक संस्कार माना जाय और अिसलिअे विवाहित जीवनमें आत्म-संयमसे रहा जाय।

हरिजन, २२–३–'४२

७

आदर्श पति और पत्नी

पत्नी पतिकी दासी नहीं है; पर अुसकी सहचारिणी है, सह-धर्मिणी है, दोनों अेक-दूसरेके सुख-दु:खके समान साझेदार हैं; और भला-बुरा करनेकी जितनी स्वतंत्रता पतिको है अुतनी ही पत्नीको है।

आत्मकथा, पृष्ठ २०, १९५७

मेरा आदर्श सीता जैसी पत्नी और राम जैसा पति है। सीता रामकी दासी नहीं थी। या यों कहिये कि दोनों अेक-दूसरेके दास थे। राम सदा सीताका ध्यान रखते थे। जहां सच्चा प्रेम होता है, वहां यह सवाल नहीं अुठता। जहां सच्चा प्रेम नहीं होता वहां कभी नहीं। लेकिन आज तो हिन्दू गृहस्थी अेक पहेली बन जब विवाह होता है, तब वे अेक-दूसरेको नहीं

लेकिन जब स्त्री-पुरुषमें से किसी अेकके भी विचार सामान्यसे भिन्न होते हैं तब झगड़ा होनेका डर रहता है। पतिको किसी बातका खयाल नहीं रहता। वह पत्नीसे सलाह लेना अपना फर्ज नहीं समझता। वह अुसे अपनी सम्पत्ति मानता है और बेचारी स्त्री पतिके अिस दावेको मंजूर करके दब जाती है। मेरे खयालसे अेक रास्ता निकल सकता है। मीराबाअीने वह मार्ग दिखाया है। पत्नीको अपने रास्ते पर जानेका पूरा हक है। जब वह जानती हो कि वह ठीक रास्ते पर है और अुसका विरोध किसी अूंचे अुद्देश्यके लिअे है, तब नम्रताके साथ सही रास्ते पर चलनेके परिणाम सह ले।

यंग अिंडिया, २१-१०-'२६

पत्नी पतिकी गुलाम नहीं, अुसकी संगिनी है। वह अुसकी अर्धांगिनी, सहयोगी और मित्र है। पतिके अधिकार और कर्तव्य, दोनोंमें अुसका बराबरीका हिस्सा है। अिसलिअे अुनकी जिम्मेदारियां अेक-दूसरेके प्रति और दुनियाके प्रति भी अेकसी और दोनोंके सहयोगसे पूरी होनी चाहिये।

यंग अिंडिया, २१-५-'३१

स्त्रियोंको पता नहीं कि वे अपने पतियों पर भलाअीकी दिशामें कितना असर डाल सकती हैं। बेशक अनजानमें तो वे डालती ही हैं, लेकिन यह काफी नहीं है। अुनमें अिस बातका ज्ञान होना चाहिये और यह ज्ञान ही अुन्हें बल देगा और अपने पतियोंके साथ व्यवहार करनेका रास्ता दिखायेगा। दुःख तो अिस बातका है कि ज्यादातर पत्नियां अपने पतियोंके चाल-चलनके बारेमें दिलचस्पी ही नहीं लेतीं। वे समझती हैं कि अुन्हें अैसा करनेका अधिकार नहीं। पर अुन्हें कभी नहीं सूझता कि जैसे अुनके चरित्रकी रक्षा करना पतियोंका धर्म है, वैसे ही पतियोंके चरित्रकी रक्षा करना अुनका भी धर्म है। फिर भी अिससे साफ बात और क्या हो सकती है कि पति-पत्नी अेक-दूसरेके सद्गुणों और दुर्गुणोंमें समान रूपसे भागीदार हैं।

हरिजन, २४-४-'३७

मैं मानता हूं कि पति-पत्नीके बीच कोअी गुप्त भेद न होना चाहिये। मेरा विवाह-बन्धनके बारेमें बहुत अूंचा खयाल है। मेरी रायमें पति-पत्नीको अेक-दूसरेमें मिलकर अेकरूप हो जाना चाहिये। वे दो शरीर और अेक आत्मा हैं।

हरिजन, ९-३-'४०

८

स्त्री-पुरुषके संबंध

स्त्रीको यह समझना छोड देना चाहिये कि वह पुरुषके भोगकी चीज है। अिसका अिलाज पुरुषके बनिस्बत स्वयं अुसके हाथमें अधिक है। अगर वह पुरुषकी बराबरीकी साझीदार बनना चाहती है तो अुसे पुरुषोंके लिअे — पतिके लिअे भी — अपनेको सजानेसे अिनकार कर देना चाहिये। मैं अिस बातकी कल्पना भी नहीं कर सकता कि सीता अपने शरीरकी सुन्दरता बढाकर रामको प्रसन्न करनेके लिअे अेक क्षण भी कभी व्यर्थ खोती होगी।

यंग अिंडिया, २१-७-'२१

प्रजोत्पत्ति स्वाभाविक क्रिया तो जरूर है, लेकिन अुसकी मर्यादायें स्पष्ट हैं। अिन मर्यादाओंका पालन नहीं होता, अिस कारणसे स्त्री-जाति भयभीत रहती है और अुसकी सन्तान दुर्बल बनती है। अिससे रोग बढ़ते हैं, पाप फैलता है और जगत अीश्वर-रहित जैसा बन जाता है।

यंग अिंडिया, २९-४-'२६

प्रत्येक पति और पत्नी आजसे ही यह दृढ़ निश्चय कर सकते हैं कि रातमें कभी अेक कमरे या अेक बिस्तरका अुपयोग नहीं करेंगे और मनुष्य तथा पशु दोनोंके लिअे निर्धारित प्रजोत्पत्तिके अेकमात्र अुदात्त हेतुके सिवा दूसरे किसी हेतुसे विषय-भोग नहीं करेंगे। पशु

अिस कानूनका अनिवार्य रूपसे पालन करता है। मनुष्यको पसन्दगीकी छूट होनेसे अुसने गलत पसन्दगी करनेकी भयंकर भूल की है। पुरुष और स्त्री दोनोंको जानना चाहिये कि काम-वासनाकी तृप्ति न करनेका परिणाम रोगमें नहीं आता, बल्कि स्वास्थ्य और शक्तिके रूपमें आता है, बशर्ते मनुष्यका मन अुसके शरीरके साथ सहयोग करे।

यंग अिंडिया, २७–९–'२८

भगवानने पुरुषको अूचीसे अूची शक्तिवाला बीज प्रदान किया है और स्त्रीको अैसा क्षेत्र दिया है जिसके बराबर अुपजाअू धरती अिस दुनियामें और कहीं नहीं मिल सकती। अवश्य ही पुरुषकी यह भयंकर मूर्खता है कि वह अपनी अिस सबसे कीमती सम्पत्तिको व्यर्थ जाने देता है। अुसे अपने अत्यन्त मूल्यवान जवाहरात और मोतियोंसे भी अधिक सावधानीके साथ अिसकी रक्षा करनी चाहिये। अिसी तरह वह स्त्री भी अक्षम्य मूर्खता करती है, जो अपने जीवोत्पादक क्षेत्रमें बीजको नष्ट हो जाने देनेके अिरादेसे ही ग्रहण करती है। वे दोनों *अीश्वर-प्रदत्त प्रतिभाके दुरुपयोगके अपराधी माने जायंगे और* जो चीज अुन्हें दी गअी है वह अुनसे छीन ली जायगी। कामकी प्रेरणा अेक सुन्दर और अुदात्त वस्तु है। अुसमें लज्जित होनेकी कोअी बात नहीं है। परन्तु वह सन्तानोत्पत्तिके लिअे ही बनाअी गअी है। अुसका और कोअी अुपयोग करना अीश्वर और मानवता दोनोंके प्रति पाप है।

हरिजन, २८–३–'३६

काम-वासनाको जीतना स्त्री या पुरुषके जीवनका परम कर्तव्य है। वासना पर प्रभुत्व पाये बिना मनुष्य अपने पर प्रभुत्व पानेकी आशा नहीं रख सकता। और अपने पर प्रभुत्व पाये बिना स्वराज्य या राम-राज्य नहीं हो सकता। स्व-राज्यके बिना स्वराज्य वैसे ही धोखा देनेवाला और निराशाजनक साबित होगा, जैसे कोअी रंगा हुआ मिलौनेका आम। वह बाहरसे देखनेमें मोहक होता है, मगर भीतर खोखला और कोरा होता है।

हरिजन, २१–११–'३६

सन्तानोत्पत्तिके ही अर्थ किया हुआ सभोग ब्रह्मचर्यका विरोधी नही है। कामाग्निकी तृप्तिके कारण किया हुआ संभोग त्याज्य है। अुसे निन्द्य माननेकी आवश्यकता नही। असंख्य स्त्री-पुरुषोंका मिलन भोगके कारण ही होता है, और होता रहेगा। अुससे जो दुष्परिणाम होते रहते हैं अुन्हें भोगना पड़ेगा। जो मनुष्य अपने जीवनको धार्मिक बनाना चाहता है, जो जीवमात्रकी सेवाको आदर्श समझकर संसार-यात्रा समाप्त करना चाहता है, अुसके लिअे ही ब्रह्मचर्यादि मर्यादाका विचार किया जा सकता है। और अैसी मर्यादा आवश्यक भी है।

हरिजनसेवक, १५–५–'३७

मैं तो अैसा मानता हू कि मुझमें जो भी अच्छाअी है वह मेरी माकी बदौलत है। अिसलिअे स्त्रियोंको मैंने कभी अिस तरह नही देखा कि वे काम-वासनाकी तृप्तिके लिअे ही बनाअी गअी हैं; बल्कि हमेशा अुसी श्रद्धासे देखा है जो श्रद्धा मैं अपनी माताके प्रति रखता हू। पुरुष ही प्रलोभन देनेवाला और आक्रमण करनेवाला है। स्त्रीके स्पर्शसे वह अपवित्र नहीं होता, बल्कि अकसर वह खुद ही स्त्रीका स्पर्श करने जितना पवित्र नही होता।

हरिजनसेवक, २३–७–'३८

९

मेरे खयालसे अेक हद तक अिस प्रकारका ज्ञान देना जरूरी है। आज तो वे (बालक) जैसे-तैसे अिधर-अुधरसे यह ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं। नतीजा यह होता है कि पथभ्रष्ट होकर वे कुछ बुरी आदतें सीख लेते हैं। हम काम-विकारकी ओरसे आँखें बन्द कर लेनेसे अुस पर अच्छी तरह नियंत्रण प्राप्त नहीं कर सकते। अिसीलिअे मेरा यह दृढ़ मत है कि नौजवान लड़के-लड़कियोंको अुनकी जननेन्द्रियोंका महत्त्व और अुचित अुपयोग सिखाया जाय। और अपने ढंगसे मैंने अुन छोटी अुमरके बालक-बालिकाओंको, जिनकी तालीमकी जिम्मेदारी मुझ पर थी, यह ज्ञान देनेकी कोशिश की है।

जिस काम-विज्ञानके पक्षमें मैं हूँ, अुसका लक्ष्य यही होना चाहिये कि अिस विकार पर विजय प्राप्त की जाय और अुसका सदुपयोग हो। अैसी शिक्षाका अपने-आप यह अुपयोग होना चाहिये कि वह बच्चोंके दिलोंमें मनुष्य और पशुके बीचका फर्क अच्छी तरह बैठा दे और अुन्हें यह अच्छी तरह समझा दे कि हृदय और मस्तिष्क दोनोंकी शक्तियोंसे विभूषित होना मनुष्यका विशेष अधिकार है। वह जितना विचारशील प्राणी है अुतना ही भावनाशील भी है — जैसा कि मनुष्य शब्दके धात्वर्थसे प्रगट होता है — और अिसलिअे ज्ञानहीन प्राकृतिक अिच्छाओं पर बुद्धिका प्रभुत्व छोड़ देना मानव-सम्पत्तिको छोड़ देना है। बुद्धि मनुष्यमें भावनाओंको जाग्रत करती है और अुसे रास्ता दिखाती है। पशुमें आत्मा सोओ हुअी रहती है। हृदयको जाग्रत करनेका अर्थ सोओ हुअी आत्माको जाग्रत करना है, बुद्धिको जाग्रत करना है और बुराअी-भलाअीका विवेक पैदा करना है।

हरिजन, २१-११-'३६

मैं मानता हूँ कि अिस देशमें स्त्रीको देने लायक सही शिक्षा यह होगी कि अुसे अपने पतिको भी 'नहीं' कहनेकी कला सिखाअी जाय, अुसे यह सिखाया जाय कि पतिके हाथोंमें केवल शिकारका साधन या गुड़िया बनकर रहना अुसका कर्तव्य बिलकुल नहीं है। यदि स्त्रीके कर्तव्य हैं तो अुसके अधिकार भी हैं। जो लोग गांधीजीसे

सन्तानोत्पत्तिके ही अर्थ किया हुआ संभोग ब्रह्मचर्यका विरोधी नहीं है। कामाग्निकी तृप्तिके कारण किया हुआ संभोग त्याज्य है। अुसे निन्द्य माननेकी आवश्यकता नहीं। असंख्य स्त्री-पुरुषोंका मिलन भोगके कारण ही होता है, और होता रहेगा। अुससे जो दुष्परिणाम होते रहते हैं अुन्हें भोगना पड़ेगा। जो मनुष्य अपने जीवनको धार्मिक बनाना चाहता है, जो जीवमात्रकी सेवाको आदर्श समझकर संसार-यात्रा समाप्त करना चाहता है, अुसके लिअे ही ब्रह्मचर्यादि मर्यादाका विचार किया जा सकता है। और अैसी मर्यादा आवश्यक भी है।

हरिजनसेवक, १५–५–'३७

मैं तो अैसा मानता हूं कि मुझमें जो भी अच्छाअी है वह मेरी माकी बदौलत है। अिसलिअे स्त्रियोंको मैंने कभी अिस तरह नहीं देखा कि वे काम-वासनाकी तृप्तिके लिअे ही बनाअी गअी हैं; बल्कि हमेशा अुसी श्रद्धासे देखा है जो श्रद्धा मैं अपनी माताके प्रति रखता हूं। पुरुष ही प्रलोभन देनेवाला और आक्रमण करनेवाला है। स्त्रीके स्पर्शसे वह अपवित्र नहीं होता, बल्कि अकसर वह खुद ही स्त्रीका स्पर्श करने जितना पवित्र नहीं होता।

हरिजनसेवक, २३–७–'३८

९

काम-विज्ञानकी शिक्षा

काम-विज्ञान दो प्रकारका होता है। अेक वह जो काम-विकारको काबूमें रखने या जीतनेके काममें आता है और दूसरा वह जो अुसे अुत्तेजन और पोषण देनेके काममें आता है। पहले प्रकारके काम-विज्ञानकी शिक्षा बालशिक्षाका अुतना ही आवश्यक अंग है, जितनी दूसरे प्रकारकी शिक्षा हानिकारक और खतरनाक है और जिससे दूर रहने योग्य है।

हरिजन, २१–११–'३६

मेरे खयालसे अेक हद तक अिस प्रकारका ज्ञान देना जरूरी है। आज तो वे (बालक) जैसे-तैसे अिधर-अुधरसे यह ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं। नतीजा यह होता है कि पथभ्रष्ट होकर वे कुछ बुरी आदतें सीख लेते हैं। हम काम-विकारकी ओरसे आंखें बन्द कर लेनेसे अुस पर अच्छी तरह नियंत्रण प्राप्त नहीं कर सकते। अिसीलिअे मेरा यह दृढ मत है कि नौजवान लड़के-लड़कियोंको अुनकी जननेन्द्रियोंका महत्त्व और अुचित अुपयोग सिखाया जाय। और अपने ढंगसे मैंने अुन छोटी अुमरके बालक-बालिकाओंको, जिनकी तालीमकी जिम्मेदारी मुझ पर थी, यह ज्ञान देनेकी कोशिश की है।

जिस काम-विज्ञानके पक्षमें मैं हूं, अुसका लक्ष्य यही होना चाहिये कि अिस विकार पर विजय प्राप्त की जाय और अुसका सदुपयोग हो। अैसी शिक्षाका अपने-आप यह अुपयोग होना चाहिये कि वह बच्चोंके दिलोंमें मनुष्य और पशुके बीचका फर्क अच्छी तरह बैठा दे और अुन्हें यह अच्छी तरह समझा दे कि हृदय और मस्तिष्क दोनोंकी शक्तियोंसे विभूषित होना मनुष्यका विशेष अधिकार है। वह जितना विचारशील प्राणी है अुतना ही भावनाशील भी है — जैसा कि मनुष्य शब्दके धात्वर्थसे प्रगट होता है — और अिसलिअे ज्ञानहीन प्राकृतिक अिच्छाओं पर बुद्धिका प्रभुत्व छोड़ देना मानव-सम्पत्तिका छोड़ देना है। बुद्धि मनुष्यमें भावनाको जाग्रत करती है और अुसे रास्ता दिखाती है। पशुमें आत्मा सोअी हुअी रहती है। हृदयको जाग्रत करनेका अर्थ सोअी हुअी आत्माको जाग्रत करना है, बुद्धिको जाग्रत करना है और बुराअी-भलाअीका विवेक पैदा करना है।

रामकी स्वेच्छासे बनी हुई दासी समझते हैं, वे सीताकी स्वतन्त्रताकी ऊँचाईको या हर बातमें राम द्वारा किये जानेवाले सीताके विचार और आदरको नहीं समझते। सीता ऐसी लाचार और निर्बल स्त्री नहीं थी, जो अपनी रक्षा या अपने सतीत्वकी रक्षा करनेमें असमर्थ हो।

हरिजन, २–५–'३६

१०

मातृत्व

जनन-क्रिया पर संसारके अस्तित्वका आधार है। संसार ईश्वरकी लीलाभूमि है, उसकी महिमाका प्रतिबिम्ब है। उसकी सुव्यवस्थित वृद्धिके लिए ही रतिक्रियाका निर्माण हुआ है।

आत्मकथा, पृष्ठ १७५–७६, १९५७

सन्तानकी इच्छा होना बिलकुल स्वाभाविक है और यह इच्छा पूरी हो जानेके बाद संभोग नहीं होना चाहिये।

हरिजन, २४–४–'३७

पुरुष और स्त्रीको ऐसे अपना एक पवित्र कर्तव्य मानना चाहिये कि शिशुके गर्भमें आनेसे लेकर जब तक वह दूध पीता है तब तक वे अलग रहें। लेकिन हम इस पवित्र दायित्वको सर्वथा भूलकर घातक मौज-शौकमें डूबे रहते हैं। यह लगभग असाध्य रोग है, जो हमारे दिमागको कमजोर बना देता है और कुछ समय तक दुःखी जीवनका भार खींचनेके बाद हमें अकाल मौतकी शरणमें ले जाता है। विवाहित लोगोंको विवाहका सच्चा हेतु समझना चाहिये और सन्तानोत्पत्तिके सिवा ब्रह्मचर्यको कभी भंग नहीं करना चाहिये।

आरोग्य विषे सामान्य ज्ञान (गुजराती), अध्याय ९

यह दुखकी बात है कि आम तौर पर हमारी लडकियोंको मातृत्वके कर्त्तव्य नहीं सिखाये जाते। लेकिन अगर विवाहित जीवन धार्मिक कर्तव्य है तो मातृत्व भी वैसा ही धार्मिक कर्तव्य है। आदर्श माता होना कोअी आसान काम नही है। सन्तानोत्पत्ति पूरी जिम्मेदारीकी भावनाके साथ ही करनी चाहिये। माताको जिस घडी गर्भ रहे तबसे बच्चा पैदा होने तकके अपने सारे कर्तव्योंका अुसे ज्ञान होना चाहिये। और जो माता समझदार, तन्दुरुस्त, अच्छी तरह पाले-पोसे हुअे बच्चे देशको देती है वह जरूर देशकी सेवा करती है।

हरिजन, २२-३-'४२

११

सन्तति-नियमन

आत्म-सयम सन्तानकी सख्याका नियमन करनेका अधिक निश्चित और अेकमात्र मार्ग है। कृत्रिम साधनो द्वारा सन्तति-नियमन करनेका मार्ग मानव-जातिकी आत्महत्याका मार्ग है।

यग अिडिया, १६-९-'२६

कृत्रिम साधनोकी सलाह देना मानो बुराअीका हौसला बढाना है। अुससे पुरुष और स्त्री अुच्छृखल हो जाते हैं। और अिन कृत्रिम साधनोको जो प्रतिष्ठा दी जा रही है, अुससे अुस सयमके टूटनेकी गति बढे बिना न रहेगी, जो कि लोकमतके कारण हममें रहता है। कृत्रिम साधनोके अवलबनका कुफल होगा — नपुसकता और क्षीणवीर्यता। यह दवा रोगसे भी ज्यादा बुरी साबित हुअे बिना न रहेगी।

हिन्दी नवजीवन, १२-३-'२५

मै तो यही कहता हू कि कृत्रिम साधन चाहे कितने ही अुचित क्यों न हो परतु वे हानिकर है। वे खुद हानिकर भले न

हां, पर वे अिस तरह हानिकर जरूर हैं कि अुनके द्वारा विषय-विकारकी भूख बढ़ती है, और ज्यों-ज्यों अुसे मिटानेका प्रयत्न किया जाता है त्यों-त्यों यह बढ़ती जाती है। जिसके मनकी यह माननेकी आदत पड़ गअी है कि विषय-भोग केवल जायज ही नहीं बल्कि वाछनीय भी है, वह सदा भोगमें ही रत रहेगा और अन्तमें अितना निर्बल हो जायगा कि अुसकी सारी संकल्प-शक्ति नष्ट हो जायगी। मैं बार बार कहता हूं कि हर बार किये गये विषय-भोगमें मनुष्यकी वह अनमोल शक्ति कम होती है, जो क्या तो पुरुष और क्या स्त्री दोनोंके शरीर, मन और आत्माको सशक्त रखनेके लिअे बहुत आवश्यक है।

हिन्दी नवजीवन, ९–४–'२५

यह आशा रखना व्यर्थ है कि सन्तति-नियमनके कृत्रिम अुपायोंका अुपयोग केवल सन्तानकी संख्या मर्यादित करनेके लिअे ही होगा। सभ्य नीतिमय जीवनकी आशा तभी तक है जब तक कि भोगेच्छाकी तृप्तिका सम्बन्ध स्पष्टतः बहुमूल्य नये जीवनके निर्माणसे है। यह सिद्धान्त विकृत भोगतृप्तिको और अुससे कुछ कम अंशमें अपनी या पराअी स्त्रीका भेद रखे बिना की जानेवाली स्वेच्छाचारपूर्ण भोग-तृप्तिको निषिद्ध ठहराता है। भोगेच्छाकी तृप्तिको अुसके कुदरती परिणामसे अलग कर दिया जाय, तो घृणित स्वेच्छाचार और अप्राकृतिक पापके लिअे नहीं तो अुसकी अुपेक्षाके लिअे तो रास्ता खुल ही जाता है।

हरिजन, ३–१०–'३६

हमारे अन्दर यह बात जमा दी गअी है कि काम-वासनाकी तृप्ति मनुष्यका अुतना ही पवित्र कर्तव्य है, जितनी कानूनी रूपमें लिये हुअे कर्जकी अदायगी; और यह भी कहा जाता है कि अैसा न करनेके फलस्वरूप बुद्धिके ह्रासका दण्ड भुगतना पड़ेगा। अिस काम-वासनाको सन्तानोत्पत्तिकी अिच्छासे अलग कर दिया गया है; और कृत्रिम साधनोंके अुपयोगके हिमायती कहते हैं कि गर्भाधान अेक

आकस्मिक घटना है, जिसे दोनों पक्षोंको यदि सन्तानकी अिच्छा न हो तो रोकना चाहिये। मैं दावेके साथ कहता हूं कि अिस सिद्धान्तका प्रचार कहीं भी अत्यन्त खतरनाक है। भारत जैसे देशमें तो यह और भी भयंकर है, क्योंकि यहां मध्यम श्रेणीका पुरुषवर्ग अपना जननेन्द्रियके दुरुपयोगके कारण शरीर और मनसे अत्यन्त दुर्बल बन गया है।

हरिजन, २८-३-'३६

सन्तति-नियमनके कृत्रिम साधनोंका अुपयोग स्त्रीजातिके लिअे अपमानजनक है। किसी वेश्या और सन्तति-नियमनके साधनोंका अुपयोग करनेवाली स्त्रीके बीच फर्क सिर्फ यही है कि पहली स्त्री अनेक पुरुषोंको अपना शरीर बेचती है, जब कि दूसरी केवल अेक पुरुषको। जब तक पत्नीकी सन्ततिकी अिच्छा न हो तब तक पतिको कोअी हक नहीं है कि वह पत्नीको छुअे। और स्त्रीमें अितना संकल्प-बल होना चाहिये कि वह अपने पतिकी भोगेच्छाका भी विरोध कर सके।

हरिजनसेवक, ५-५-'४६

हमारा यह छोटासा पृथ्वी-मंडल कलका बना हुआ खिलौना नहीं है। अनगिनत युगोंसे यह अैसा ही चला आ रहा है। जनसंख्याकी वृद्धिके भारसे अुसने कभी कष्टका अनुभव नहीं किया। तब कुछ लोगोंके मनमें अेकाअेक अिस सत्यका अुदय कहांसे हो गया कि यदि सन्तति-नियमनके कृत्रिम साधनोंसे जनसंख्याकी वृद्धिको रोका न गया, तो अन्न न मिलनेसे पृथ्वी-मंडलका नाश हो जायगा?

हरिजनसेवक, २०-९-'३५

१२

तलाक और पुनर्विवाह

जो स्त्री नरम मिजाजकी है और विरोध नहीं कर सकती या विरोध करनेको तैयार भी नहीं होती, कानूनकी सुविधा अन्यायी पतिसे असका कोअी बचाव नहीं करती। ... हिन्दू संस्कृतिने यह गलती की है कि पत्नीको पतिके बहुत ज्यादा अधीन बना दिया है और अिस बात पर जोर दिया है कि पत्नी अपनेको पतिमें पूरी तरह समा दे। अिसका फल यह होता है कि पति कभी कभी अैसा अधिकार ले लेता है और असका अैसा अपयोग करता है जिससे वह गिरकर पशु बन जाता है। अिसलिअे अिस तरहकी ज्यादतियोंका अिलाज कानून नहीं, बल्कि स्त्रियोंकी सच्ची शिक्षा है और पतियोंकी तरफसे होनेवाले अिस तरहके अमानुषिक बरतावके खिलाफ लोकमत तैयार करना है। . . . अिसलिअे वह (पत्नी) चाहे तो विवाहका वचन तोड़े बिना पतिके घरसे अलग रह सकती है और यह समझ सकती है कि मेरा विवाह ही नहीं हुआ। अलबत्ता, हिन्दू पत्नीको तलाक तो नहीं मिल सकता, मगर दो और कानूनी अपाय हैं। अेक है मामूली मारपीटके अपराधमें पतिको सजा दिलाना और दूसरा है असुसे जीविकाका खर्च वसूल करना। अनुभव मुझे बताता है कि सब मामलोंमें नहीं तो ज्यादातरमें यह अिलाज बिलकुल बेकार है। असिसे सदाचारिणी स्त्रीको कोअी राहत नहीं मिलती और पतिके सुधारका सवाल असंभव नहीं तो कठिन जरूर बन जाता है। क्योंकि अन्तमें तो समाजका और असुसे भी ज्यादा पत्नीका लक्ष्य पतिका सुधार करना ही होना चाहिये।

यंग अिंडिया, ३–१०–’२९

विधवा-विवाह

अगर कोअी स्त्री अपने पतिकी जुदाअीके रंजमें सोच-समझकर अपनी मरजीसे विधवा रहना पसन्द करे, तो असुसे जीवनकी शोभा

और प्रतिष्ठा बढ़ती है, घर पवित्र होता है और स्वयं धर्म भी ऊंचा अुठता है। धर्म या रिवाजका लादा हुआ वैधव्य अेक असहनीय जुआ है और वह गुप्त पापसे घरको अपवित्र करता है और धर्मको नीचे गिराता है।

अगर हमें शुद्ध होना है, अगर हम हिन्दू धर्मको बचाना चाहते हैं, तो हमें लादे हुअे वैधव्यका यह जहर निकाल ही डालना चाहिये। यह सुधार अुन्हीको शुरू करना चाहिये जिनके यहां बाल-विधवायें हैं। अुन्हें पूरी हिम्मत दिखानी चाहिये और अिस बातकी सावधानी रखनी चाहिये कि अुनके संरक्षणमें जो बाल-विधवायें हैं अुनका विधिपूर्वक और अच्छी तरह विवाह हो जाय। मैं अुनके अिस विवाहको पुनर्विवाह नहीं कहूंगा, क्योंकि अुनका विवाह तो दरअसल कभी हुआ ही नहीं था।

यंग अिंडिया, ५–८–'२६

अन्तर्जातीय विवाह

अगर हिन्दुस्तान अेक और अखंड है, तो अवश्य ही अुसमें अैसे बनावटी विभाग नहीं होने चाहिये जिनमें छोटे छोटे बेशुमार गुट बनें, जो न आपसमें खाना-पीना करते हों और न शादी-ब्याह। अिस निर्दय प्रथामें धर्मका नाम भी नहीं है। यह दलील देनेसे काम नहीं चल सकता कि कोअी अेक आदमी अिसकी शुरुआत नहीं कर सकता और जब तक अिस परिवर्तनके लिअे सारा समाज तैयार नहीं हो जाता तब तक व्यक्तियोंको ठहरना पड़ेगा। जब तक निडर व्यक्तियोंने अमानुषिक रीति-रिवाजोंको नहीं तोड़ा है तब तक समाजमें कभी कोअी सुधार नहीं हुआ है।

हरिजन, २५–७–'३६

१२

वेश्यावृत्ति

हम स्त्रियोंको अपनी लम्पटताका शिकार नहीं बना सकते। कमजोरोंकी रक्षाका कानून यहां विशेष जोरके साथ लागू होता है। मेरे विचारसे गोरक्षाके अर्थमें हमारी स्त्रियोंकी रक्षा भी शामिल है। जब तक हम अपने यहांकी स्त्रियोंको मा, बहन या बेटी समझ कर अुनका आदर करना न सीखेंगे, तब तक भारतका अुद्धार नहीं होगा। हमें वे पाप धो डालने चाहिये, जो हमारे मनुष्यत्वकी हत्या करके हमें पशु बनाते हैं।

यंग अिंडिया, १३–४–'२१

जबसे दुनियाका अस्तित्व है तभीसे वेश्यागमन भी रहा है। लेकिन मैं नहीं मानता कि जैसे आजकल वह शहरी जीवनका अेक अंग बन गया है वैसा ही पहले भी रहा होगा। जैसे मानव-जातिने बहुतसी पुरानीसे पुरानी कुरीतियोंको छोड़ दिया है, वैसे ही अेक समय जरूर अैसा आयेगा जब मनुष्य अिस अभिशापके खिलाफ भी विद्रोह करेगा और वेश्यागमनका नाश हो जायगा।

यंग अिंडिया, २८–५–'२५

आम तौर पर बदचलन औरतोंको ही वेश्या कहा जाता है। लेकिन जो पुरुष अिस बुराओमें फसते हैं वे भी अगर ज्यादा नहीं तो अुतने ही बदचलन जरूर हैं, जितनी वे बहनें जिन्हें अकसर अपना पेट पालनेके लिअे तन बेचना पड़ता है। बेशक, यह बुराओ गैर-कानूनी घोषित कर दी जानी चाहिये। लेकिन अैसे मामलोंमें कानून अेक हद तक ही मदद कर सकता है। कानूनके रहते हुअे भी यह बुराओ हरअेक देशमें सदियोंसे चली आ रही है। जोरदार लोकमत कानूनकी मदद भी कर सकता है और अुसके काममें रुकावट भी डाल सकता है।

हरिजनसेवक, १५–९–'४६

यदि व्यभिचार और वेश्यावृत्ति मिट जाय तो आजके कमसे कम आधे डॉक्टरोंकी रोजी खतम हो जाय। सचमुच अिन गरमी, सुजाक जैसे रोगोंने मनुष्य-जातिको अपने फंदेमें अैसी बुरी तरह जकड़ लिया है कि विचारशील चिकित्सकोंको मजबूर होकर यह स्वीकार करना पड़ा है कि जब तक व्यभिचार और वेश्यावृत्ति कायम रहेगी, तब तक रोग-निवारणकी दवाओंके सारे आविष्कारोंके बावजूद मनुष्य-जातिके लिअे कोअी आशा नहीं है। अिन रोगोंकी दवाअियां अितनी जहरीली होती है कि कुछ समयके लिअे वे भले लाभदायक साबित होती मालूम हों, परन्तु वे दूसरे और अधिक भयंकर रोगोंको पैदा करती है, जो अेक पीढ़ीसे दूसरी पीढ़ीमें अुतरते है।

आरोग्य विषे सामान्य ज्ञान (गुजराती), अध्याय ९

वेश्यालयोंकी समस्या हल करनेका अुचित तरीका तो यह है कि स्त्रियां दुहरा प्रचार करें: (१) अुन स्त्रियोंमें जो जीविकाके लिअे अपनी अिज्जत बेचती हैं, और (२) पुरुषोंमें। वे अिन पुरुषोंको शरमायें और अुन्हें स्त्रियोंके प्रति, जिन्हें कि वे अज्ञानवश या अभिमानवश अबला समझते हैं, ज्यादा अच्छा व्यवहार करनेके लिअे समझायें। बहुत वर्ष पहलेकी बात मुझे याद आती है। पिछली सदीके अन्तिम दशकमें मुक्तिसेनाके बहादुर स्वयंसेवक अपनी प्राण-हानिका संकट अुठाकर बम्बअीकी अुन बदनाम गलियोंके कोनों पर, जहां वेश्याओंकी बस्ती थी, पिकेटिंग किया करते थे। वैसा ही प्रयत्न बड़े पैमाने पर फिरसे संगठित क्यों न किया जाय?

हरिजन, ४–९–'३७
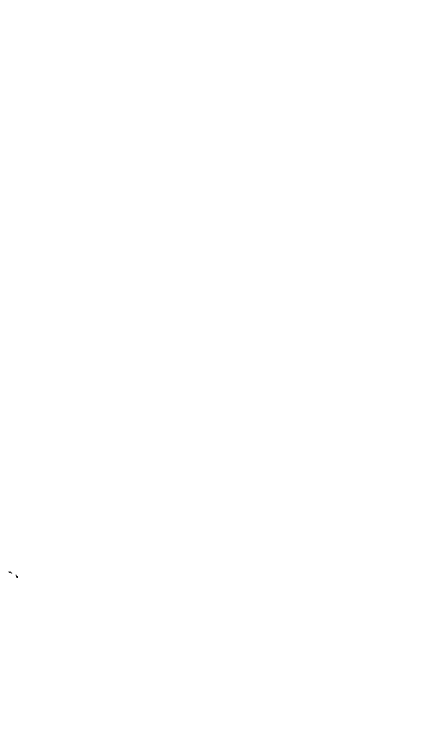
पतित जीवन बितानेको ही पैदा हुआी हैं ? मैं हर युवकसे, वह विवाहित हो या कुंवारा, कहता हूं कि मैंने जो कुछ लिखा है अुसके गूढ़ अर्थों पर वह ध्यानसे विचार करे। अिस सामाजिक रोगके, अिस नैतिक कोढ़के बारेमें मैंने जो कुछ जाना है वह सब मैं लिख नहीं सकता। बाकीका हिस्सा अुसे अपनी कल्पनासे पूरा कर लेना चाहिये और फिर अुसे — अगर वह खुद अिसका अपराधी बन चुका हो तो — अिस पापसे डर और शर्मके मारे दूर भागना चाहिये। और हर शुद्ध पुरुषको चाहिये कि वह अपने पड़ोसको शुद्ध करनेकी कोशिश करे। मैं जानता हूं कि यह पिछली बात कहना आसान है, पर करना मुश्किल है। यह अेक नाजुक मामला है। लेकिन नाजुक होनेके कारण ही अिस पर सब विचारशील पुरुषोंको ध्यान देना चाहिये। अभागी बहनोंमें काम करनेकी बात हर जगह विशेषज्ञों पर छोड़ देनी चाहिये। मैंने जो सुझाव दिया है अुसका सम्बन्ध अुन पुरुषोंके बीच काम करनेसे है, जो अिन वेश्यालयोंमें जाते हैं।

यंग अिंडिया, १६–४–'२५

पापमें पुण्य देखनेकी और बुराओीको कलाके पवित्र नाम पर या और किसी झूठी भावनाके नाम पर क्षमा करनेकी वृत्तिके कारण अिस पतनकारी लम्पटताको अेक तरहकी सूक्ष्म प्रतिष्ठा मिल गअी है और अिसीके कारण समाजमें वह नैतिक कोढ़ फैल रहा है जो अंधेको भी दीख सकता है। . . यह बुराअी बहुत बढ़ गअी है और जमाना नास्तिकताका या यांत्रिक आस्तिकताका है, अिसके सिवा आजकल अैश-आरामकी सामग्री अितनी बढ़ गअी है कि हमें रोमके अुस समयके पतनकी याद आती है जब वह शक्तिके अुच्च शिखर पर पहुंचा हुआ दिखाअी देता था। अिसलिअे अिस बुराअीका अिलाज बताना आसान नहीं है। कानूनसे अिसका अिलाज नहीं हो सकता।

यंग अिंडिया, ९–७–'२५

अुन्हें देवदासी कहकर हम धर्मके नाम पर खुद अीश्वरका अपमान करते हैं और दोहरा अपराध करते हैं, क्योंकि हम अपनी

अिन बहनोंका अुपयोग तो करते हैं अपनी लम्पटताके लिअे और साथ ही नाम लेते हैं अीश्वरका। अेक तरफ तो अैसे लोगोंका अेक वर्ग रहे जिनका काम अिस तरहकी अनैतिक सेवा करना हो और दूसरी तरफ अेक अैसा वर्ग हो जो अुनके भयंकर दुराचरणको बरदाश्त करे, यह स्थिति मनुष्यको जीवनसे सर्वथा निराश और हताश बनानेवाली है।

यंग अिंडिया, २२-२-'२७

१५
स्त्रीकी प्रतिष्ठा

स्त्रीकी रक्षा करना पुरुषका विशेष धर्म भले ही हो, लेकिन पुरुष न हो या स्त्रीकी रक्षाके अपने पवित्र कर्तव्यका वह पालन न कर सके, तो हिन्दुस्तानकी कोअी भी स्त्री अपनेको असहाय न समझे। जिसे मरना आता है अुसे अपनी अिज्जत पर आंच आनेका अन्देशा रखनेकी बिलकुल जरूरत नहीं।

यंग अिंडिया, १५-१२-'२१

मैं हमेशासे मानता रहा हूं कि किसी स्त्री पर अुसकी मरजीके खिलाफ बलात्कार करना असंभव है। यह अत्याचार तभी होता है जब या तो वह डर जाती है या अपनी नैतिक शक्तिको नहीं पहचानती। अगर वह हमला करनेवालेके शरीर-बलका सामना नहीं कर सके, तो अुसकी शुद्धता अुसे वह ताकत दे देगी जिससे वह मर जायगी, मगर जीते-जी लम्पट पुरुष अुस पर बलात्कार नहीं कर सकेगा। सीताजीका ही अुदाहरण लीजिये। शरीरकी शक्तिकी दृष्टिसे वे रावणके सामने कुछ भी नहीं थी, लेकिन अुनकी शुद्धताके आगे रावणका राक्षसी बल भी कुछ न कर सका। अुसने सीताजीको तरह तरहके प्रलोभनोंसे फुसलाना चाहा, लेकिन अुनकी मरजीके खिलाफ वह अुन्हें छू भी नहीं

सका। अिसके विपरीत, अगर किसी स्त्रीको अपने ही शरीर-बलका या अपने पासके हथियारका भरोसा हो, तो जब भी अुसका बल खतम हो जायेगा तब अुसकी हार जरूर हो जायगी।

हरिजन, १–९–'४०

जब किसी स्त्री पर हमला हो तब अुसे हिंसा या अहिंसाका विचार करने नहीं बैठना चाहिये। अुसका पहला फर्ज अपना बचाव करना है। अुसे अपनी अिज्जतकी रक्षाके लिअे जो भी अुपाय सूझे अुसका अुपयोग करनेकी छूट है। अीश्वरने अुसे नाखून और दांत दिये हैं। सारा जोर लगा कर अुसे अिनका अुपयोग करना चाहिये और जरूरत हो तो अैसा प्रयत्न करते करते मर जाना चाहिये। जिस पुरुष या स्त्रीने मृत्युका सब डर छोड़ दिया है, वह अपनी जान देकर अपना ही नहीं, बल्कि दूसरोंका भी बचाव कर सकता है।

हरिजन, १–३–'४२

१६

दहेजकी प्रथा

जो युवक विवाहके लिअे दहेजकी शर्त रखता है, वह अपनी शिक्षा और अपने देशको बदनाम करता है और साथ ही स्त्रीजातिका अपमान करता है। अिस वक्त देशमें कअी युवक-आन्दोलन चल रहे हैं। मैं चाहता हूं कि अिस तरहके प्रश्नोंको ये आन्दोलन अपने हाथमें लें। अिन आन्दोलनोंको चलानेवाली संस्थायें ठोस भीतरी सुधारकी संस्थायें न होकर अकसर अपनी बड़ाअी करनेवाली संस्थायें बन जाती हैं। . . . दहेजके नीचे गिरानेवाले रिवाजकी निंदा करनेवाला जोरदार लोकमत पैदा होना चाहिये और जो युवक अिस तरहके पापके पैसेसे अपने हाथ गंदे करें अुन्हें समाजसे बाहर निकाल देना चाहिये। लड़कियोंके मां-बापको अंग्रेजी डिग्रियोंका मोह छोड़ देना चाहिये और

अपनी लडकियोंके लिअे सच्चे और बहादुर नौजवान ढूंढनेके लिअे अपनी छोटी जातियों और प्रांतोंसे बाहर निकलनेमें संकोच नहीं करना चाहिये।

यंग अिंडिया, २१–६–'२८

अिस प्रथाको मिटाना ही पडेगा। विवाह रुपयेके खातिर मा-बापका किया हुआ सौदा नहीं होना चाहिये। अिस प्रथाका जाति-पातिसे गहरा सम्बन्ध है। जब तक किसी खास जातिके ही सौ-दो सौ युवक-युवतियोंके भीतर चुनाव करना पडेगा, तब तक अिस प्रथाको कितनी ही निंदा की जाय यह कायम रहेगी। अगर अिस बुराअीको जडसे मिटाना है, तो लड़के-लड़कियों या अुनके मा-बापको जातिका बंधन तोडना होगा। विवाहकी अुमर भी बढानी पड़ेगी और जरूरत हुअी, यानी योग्य वर न मिला, तो लड़कियोंको कुंवारी रहनेका भी साहस करना पडेगा। अिस सबका मतलब अैसी शिक्षा देना होगा, जो राष्ट्रके युवकोंकी मनोवृत्तिमें क्रांति पैदा कर दे।

हरिजन, २३–५–'३६

१७

स्त्रियां और गहने

जिस देशमें करोडों आधे पेट रहते हों और लगभग अस्सी फीसदी लोगोंको पूरा पौष्टिक भोजन न मिलता हो, अुस देशमें गहने पहनना आंखको बुरा लगता है। हिन्दुस्तानमें स्त्रीके पास अैसा नकद पैसा शायद ही होता है जिसे वह अपना कह सके। लेकिन जो आभूषण वह पहनती है वे अुसके जरूर होते हैं। अलबत्ता, अुन्हें भी वह अपने पति और स्वामीकी मरजीके बगैर नहीं देगी, देनेकी नहीं करेगी। कोअी अैसी चीज, जिसे वह अपनी कहती हो, अच्छे काममें दे डालनेसे वह अूची अुठती है। अिसके अलावा,

ज्यादातर आभूषणोंमें कला जैसी कोअी चीज नहीं होती। अिनमें से कुछ तो बेशक भद्दे होते हैं और मैलके घर होते हैं। पाजेब, भारी हार, बालोंको ठीक रखनेके लिअे नहीं बल्कि बिखरे हुअे, बिन-धोये और अकसर बदबूभरे बालोंकी सजावटके लिअे लगाये जानेवाले आकडे या कलाअीसे कोहनी तक चूड़ियोंकी कतार पर कतार — सब अैसे ही गहने हैं। मेरी रायमें कीमती गहने पहननेमें देशका स्पष्ट नुकसान है। यह तो अितनी सारी पूंजीको रोक रखना या अिससे भी बुरा अुसे बरबाद हो जाने देना हुआ। आत्मशुद्धिके अिस आन्दोलनमें स्त्रियां और पुरुष अपने गहने दे दें तो मैं मानता हूं कि समाजको स्पष्ट लाभ होगा। जो देते हैं वे खुशीसे देते हैं। हर हालतमें मेरी शर्त यह है कि दिये हुअे गहनोंकी जगह नये हरगिज न बनवाये जाय। सच तो यह है कि स्त्रियोंने मुझे अिस बातके लिअे आशीर्वाद दिया है कि जिन चीजोंने अुन्हें गुलाम बना रखा है अुन्हें छोड़नेके लिअे मैंने अुन्हें समझा लिया। और बहुत जगह पुरुषोंने मुझे अिस बातके लिअे धन्यवाद दिया है कि मैं अुनके घरोंमें सादगी लानेका जरिया बना।

हरिजन, २२-१२-'३३

जो कैदी अपनी जंजीरोंको आभूषण मानकर प्यार करते हैं — जैसा कि कअी लड़कियां और सयानी स्त्रियां तक अपनी सोने-चांदीकी जंजीरोंसे और अंगूठियोंसे करती हैं — अुनके बन्धन काटना मुश्किल है।

हरिजन, २०-३-'३७

ज्यादातर आभूषणोंमें कला जैसी कोअी चीज नहीं होती। अिनमें से कुछ तो बेशक भद्दे होते हैं और मैलके घर होते हैं। पाजेब, भारी हार, बालोंको ठीक रखनेके लिअे नहीं बल्कि बिखरे हुअे, बिन-धोये और अकसर बदबूभरे बालोंकी सजावटके लिअे लगाये जानेवाले आकडे या कलाअीसे कोहनी तक चूडियोंकी कतार पर कतार — सब अैसे ही गहने हैं। मेरी रायमें कीमती गहने पहननेसे देशका स्पष्ट नुकसान है। यह तो अितनी सारी पूंजीको रोक रखना या अिससे भी बुरा अुसे बरबाद हो जाने देना हुआ। आत्मशुद्धिके अिस आन्दोलनमें स्त्रियां और पुरुष अपने गहने दे दें तो मैं मानता हूं कि समाजको स्पष्ट लाभ होगा। जो देते हैं वे खुशीसे देते हैं। हर हालतमें मेरी शर्त यह है कि दिये हुअे गहनोंकी जगह नये हरगिज न बनवाये जायं। सच तो यह है कि स्त्रियोंने मुझे अिस बातके लिअे आशीर्वाद दिया है कि जिन चीजोंने अुन्हें गुलाम बना रखा है अुन्हें छोडनेके लिअे मैंने अुन्हें समझा लिया। और बहुत जगह पुरुषोंने मुझे अिस बातके लिअे धन्यवाद दिया है कि मैं अुनके घरोंमें सादगी लानेका जरिया बना।

हरिजन, २२–१२–'३३

जो कैदी अपनी जजीरोंको आभूषण मानकर प्यार करते हैं — जैसा कि कभी लड़कियां और सयानी स्त्रियां तक अपनी सोने-चांदीकी जंजीरोंसे और अंगूठियोंसे करती हैं — अुनके बन्धन काटना मुश्किल है।

हरिजन, २०–३–'३७

अपनी लड़कियोंके लिअे सच्चे और बहादुर नौजवान ढूंढनेके लिअे अपनी छोटी जातियों और प्रांतोंसे बाहर निकलनेमें संकोच नहीं करना चाहिये।

यंग अिंडिया, २१–६–'२८

अिस प्रथाको मिटाना ही पड़ेगा। विवाह रुपयेके खातिर मा-बापका किया हुआ सौदा नहीं होना चाहिये। अिस प्रथाका जाति-पातिसे गहरा सम्बन्ध है। जब तक किसी खास जातिके ही सौ-दो सौ युवक-युवतियोंके भीतर चुनाव करना पड़ेगा, तब तक अिस प्रथाकी कितनी ही निंदा की जाय यह कायम रहेगी। अगर अिस बुराओीको जड़से मिटाना है, तो लड़के-लड़कियों या अुनके मा-बापको जातिका बंधन तोड़ना होगा। विवाहकी अुमर भी बढ़ानी पड़ेगी और जरूरत हुअी, यानी योग्य वर न मिला, तो लड़कियोंको कुंवारी रहनेका भी साहस करना पड़ेगा। अिस सबका मतलब अैसी शिक्षा देना होगा, जो राष्ट्रके युवकोंकी मनोवृत्तिमें क्रांति पैदा कर दे।

हरिजन, २३–५–'३६

१७

स्त्रियां और गहने

जिस देशमें करोड़ों आधे पेट रहते हों और लगभग अस्सी फीसदी लोगोंको पूरा पौष्टिक भोजन न मिलता हो, अुस देशमें गहने पहनना आंखको बुरा लगता है। हिन्दुस्तानमें स्त्रीके पास अैसा नकद पैसा शायद ही होता है जिसे वह अपना कह सके। लेकिन जो आभूषण वह पहनती है वे अुसके जरूर होते हैं। अलबत्ता, अुन्हें भी वह अपने पति और स्वामीकी मरजीके बगैर नहीं देगी, देनेकी हिम्मत नहीं करेगी। कोअी अैसी चीज, जिसे वह अपनी कहती हो, किसी अच्छे काममें दे डालनेसे वह अूंची अुठती है। अिसके अलावा,

ज्यादातर आभूषणोंमें कला जैसी कोअी चीज नहीं होती। अिनमें से कुछ तो बेशक भद्दे होते हैं और मैलके घर होते हैं। पाजेब, भारी हार, बालोंको ठीक रखनेके लिअे नहीं बल्कि बिखरे हुअे, बिन-धोये और अकसर बदबूभरे बालोंकी सजावटके लिअे लगाये जानेवाले आकड़े या कलाअियोंसे कोहनी तक चूड़ियोंकी कतार पर कतार — सब अैसे ही गहने हैं। मेरी रायमें कीमती गहने पहननेमें देशका स्पष्ट नुकसान है। यह तो अितनी सारी पूंजीको रोक रखना या अिससे भी बुरा अुसे बरबाद हो जाने देना हुआ। आत्मशुद्धिके अिस आन्दोलनमें स्त्रियां और पुरुष अपने गहने दे दें तो मैं मानता हूं कि समाजको स्पष्ट लाभ होगा। जो देते हैं वे खुशीसे देते हैं। हर हालतमें मेरी शर्त यह है कि दिये हुअे गहनोंकी जगह नये हरगिज न बनवाये जाय। सच तो यह है कि स्त्रियोंने मुझे अिस बातके लिअे आशीर्वाद दिया है कि जिन चीजोंने अुन्हें गुलाम बना रखा है अुन्हें छोड़नेके लिअे मैंने अुन्हें समझा लिया। और बहुत जगह पुरुषोंने मुझे अिस बातके लिअे धन्यवाद दिया है कि मैं अुनके घरोंमें सादगी लानेका जरिया बना।

हरिजन, २२–१२–'३३

जो कैदी अपनी जंजीरोंको आभूषण मानकर प्यार करते हैं — जैसा कि कअी लड़कियां और सयानी स्त्रियां तक अपनी सोने-चांदीकी जंजीरोंसे और अंगूठियोंसे करती हैं — अुनके बन्धन काटना मुश्किल है।

हरिजन, २०–३–'३७

१८

सन्तान

जिस प्रकार बच्चोको माता-पिताकी सूरत-शकल विरासतमें मिलती है, अुसी प्रकार अुनके गुण-दोष भी विरासतमें मिलते हैं। अवश्य ही आसपासके वातावरणके कारण अिसमें अनेक प्रकारकी घट-बढ होती है, पर मूल पूजी तो वही रहती है जो बापदादोंसे मिलती है। मैंने देखा है कि कुछ बालक अपनेको अैसे दोषोकी विरासतसे बचा लेते हैं। यह आत्माका मूल स्वभाव है, अुसकी बलिहारी है।

आत्मकथा, पृष्ठ २७२, १९५७

माता-पिता अपनी सब सन्तानोके लिअे कोअी सच्ची सम्पत्ति अगर समान रूपसे छोड़ सकते हैं तो वह है अपना चरित्र और शिक्षाकी सुविधायें। माता-पिताको अपने लड़के-लड़कियोको अिस लायक बनानेकी कोशिश करनी चाहिये कि वे अपने पैरो पर खड़े हो सकें और पसीनेकी कमाअीसे अीमानदारीकी रोटी खा सकें।

यग अिंडिया, १७–१०–'२९

१९

आधुनिक लड़कियां

स्त्रीने अनजाने ही तरह तरहके सूक्ष्म जाल फैलाकर पुरुषको फसाया है और पुरुषने भी अुतने ही अनजाने स्त्रीको अपने पर हावी न होने देनेकी कोशिश की है। नतीजा यह हुआ है कि गृहस्थीकी गाडी अटक गअी है। अिस तरह देखा जाय तो भारतमाताकी ज्ञानवान पुत्रियोको जो सवाल हल करना है वह बड़ा गभीर है। पश्चिमका ढग वहाकी परिस्थितियोके अनुकूल हो सकता है; अुसकी भारतमें नकल नहीं होनी चाहिये। भारतीय स्त्रियोको भारतीय प्रतिभा और भारतीय वातावरणके अनुकूल तरीके ही अिस्तेमाल करने चाहिये। अुनका काम

अपना वातावरण शुद्ध रखनेका, पुरुषोंकी अुग्रताको नियंत्रित करनेका और अुन्हें बल पहुंचानेका होना चाहिये। अुन्हें हमारी संस्कृतिकी अच्छी बातोंकी रक्षा करनी चाहिये और अुसके दोषोंको दूर करना चाहिये। यह काम सीताओं, द्रौपदियों, सावित्रियों और दमयन्तियोंका है, न कि पुरुषोंकी नकल करनेवाली या झूठी शिष्टता दिखानेवाली स्त्रियोंका।

यंग अिंडिया, १७–१०–'२९

लेकिन मुझे डर है कि आजकलकी लड़कियोंको अनेक युवकोंकी दृष्टिमें आकर्षक बननेका शौक होता है। अुन्हें साहसके कामसे प्रेम होता है। . नअी रोशनीकी लड़कियां हवा, पानी और धूपसे बचनेके लिये नहीं, बल्कि दूसरोंका ध्यान खींचनेके लिये कपड़े पहनती हैं। वे अपनेको पाअुडर वगैरासे रंग कर और असाधारण दिखाअी देकर कुदरतसे दो कदम आगे चलती हैं। अहिंसाका रास्ता अैसी लड़कियोंके लिये नहीं है।

हरिजन, ३१–१२–'३८

गांधी-विचार-मालाकी अन्य पुस्तकें

१. पंचायत राज कीमत ०.३० डा. खर्च ०.१३	ग्राम-पंचायतोंके महत्त्व और अुनके कार्य पर प्रकाश डालती है।
२. सन्तति-नियमन : सही मार्ग और गलत मार्ग कीमत ०.४० डा. खर्च ०.१३	सन्तति-नियमनके लाभदायक और हानिकारक दोनों प्रकारके अुपायोंकी चर्चा करती है।
३. शाकाहारका नैतिक आधार कीमत ०.२५ डा. खर्च ० १३	शाकाहार क्यों और मांसाहार क्यों नहीं, अिन प्रश्नोंका अुत्तर देती है।
४. गीताका सन्देश कीमत ०.३० डा. खर्च ० १३	गीताके महत्त्व और अुसके सन्देश, केन्द्रीय शिक्षा, की चर्चा करती है।
५. विश्वशान्तिका अहिंसक मार्ग कीमत ०.४० डा. खर्च ०.१३	युद्धोंके अन्तका और स्थायी शांतिका अहिंसक मार्ग बताती है।
६. सहकारी खेती कीमत ०.२० डा. खर्च ०.१३	सहकारी खेतीकी जरूरत, अुसकी पद्धति और अुसके लाभ बताती है।

नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद–१४

बापूके पत्र – १ : आश्रमकी बहनोंको

गांधीजीके अक्षर-शरीरका अेक बड़ा भाग अुनके प्रेमोपदेश
गंगा बहानेवाले असंख्य पत्र हैं। प्रस्तुत पत्र गांधीजीने साबरम
आश्रमकी बहनोंको लिखे थे। अिनमें अुन्होंने तीन बातों पर जोर दि
है: १. सामाजिक जीवनका महत्त्व, २. शिक्षाका अर्थ चरित्र-निम
और जीवनकी दृष्टिसे आवश्यक कौशलकी प्राप्ति, तथा ३. शरीर-श्र
अुद्योग-परायणता, सादगी और संयमके प्रति निष्ठा।

कीमत १.२५ डाकखर्च ०.३१

सयानी कन्यासे

लेखक : नरहरि परीख; अनु० काशिनाथ त्रिवेदी

तारुण्यमें प्रवेश करनेवाली कन्याओंके मनमें जो जो प्रश्न अुठते हैं, अुनके विषयमें लेखकने अपनी पुत्रीको ये पत्र लिखे हैं। अिस पुस्तकमें गांधीजीके तत्सम्बन्धी दो पत्रोंका तथा श्री काकासाहबके अेक लेखका भी समावेश किया गया है।

कीमत १.०० डाकखर्च ०.२५

स्त्रियां और अुनकी समस्यायें

लेखक : गांधीजी; संपादक : भारतन् कुमारप्पा

गांधीजीका मत था कि जब तक राष्ट्रकी जननी-स्वरूप देशकी स्त्रियां शिक्षित और स्वतंत्र नहीं बनती तथा अुनसे सम्बन्धित कानूनों, रीति-रिवाजों और पुरानी रूढ़ियोंमें अनुकूल परिवर्तन नहीं होता, तब तक हमारा राष्ट्र आगे नहीं बढ़ सकता। अिन्हीं बातोंकी चर्चा अिस पुस्तकमें हुअी है और स्त्रियोंकी प्रगतिमें बाधक बननेवाली समस्याओंके हलका सच्चा मार्ग बताया गया है।

डाकखर्च ०.१९

गांधी-विचार-मालाकी अन्य पुस्तकें

१. पंचायत राज
कीमत ०.१० डा. खर्च ०.११
ग्राम-पंचायतोंके महत्त्व और अुनके कार्य पर प्रकाश डालती है।

२. सन्तति-नियमन : सही मार्ग और गलत मार्ग
कीमत ०.४० डा. खर्च ०.११
सन्तति-नियमनके लाभदायक और हानिकारक दोनों प्रकारके अुपायोंकी चर्चा करती है।

३. शाकाहारका नैतिक आधार
कीमत ०.२५ डा. खर्च ०.११
शाकाहार क्यों और मांसाहार क्यों नहीं, अिन प्रश्नोंका अुत्तर देती है।

४. गीताका सन्देश
कीमत ०.३० डा. खर्च ०.११
गीताके महत्त्व और अुसके सन्देश, केन्द्रीय शिक्षा, की चर्चा करती है।

५. विश्वशान्तिका अहिंसक मार्ग
कीमत ०.४० डा. खर्च ०.११
युद्धोंके अन्तका और स्थायी शान्तिका अहिंसक मार्ग बताती है।

६. सहकारी खेती
कीमत ०.२० डा. खर्च ०.११
सहकारी खेतीकी जरूरत, अुसकी पद्धति और अुससे लाभ बताती है।

नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद-१४

बापूके पत्र — १ : आश्रमकी बहनोंको

गांधीजीके अक्षर-शरीरका अेक बड़ा भाग अुनके प्रेमोपदेशकी गंगा बहानेवाले असंख्य पत्र हैं। प्रस्तुत पत्र गांधीजीने साबरमती आश्रमकी बहनोंको लिखे थे। अिनमें अुन्होंने तीन बातों पर जोर दिया है : १. सामाजिक जीवनका महत्त्व, २. शिक्षाका अर्थ चरित्र-निर्माण और जीवनकी दृष्टिसे आवश्यक कौशलकी प्राप्ति, तथा ३. शरीर-श्रम, अुद्योग-परायणता, सादगी और संयमके प्रति निष्ठा।

कीमत १.२५ डाकखर्च ०.३१

सयानी कन्यासे

लेखक नरहरि परीख; अनु० काशिनाथ त्रिवेदी

तारुण्यमें प्रवेश करनेवाली कन्याओंके मनमें जो जो प्रश्न अुठते हैं, अुनके विषयमें लेखकने अपनी पुत्रीको ये पत्र लिखे हैं। अिस पुस्तकमें गांधीजीके तत्सम्बन्धी दो पत्रोंका तथा श्री काकासाहबके अेक लेखका भी समावेश किया गया है।

कीमत १.०० डाकखर्च ०.२५

स्त्रियाँ और अुनकी समस्यायें

गांधी-विचार-मालाकी अन्य पुस्तकें

१. पंचायत राज कीमत ०.३० डा. खर्च ०.१३	ग्राम-पंचायतोंके महत्त्व और अुनके कार्य पर प्रकाश डालती है।
२. सन्तति-नियमन : सही मार्ग और गलत मार्ग कीमत ०.४० डा. खर्च ०.१३	सन्तति-नियमनके लाभदायक और हानिकारक दोनों प्रकारके अुपायो-की चर्चा करती है।
३. शाकाहारका नैतिक आधार कीमत ०.२५ डा. खर्च ० १३	शाकाहार क्यों और मांसाहार क्यों नहीं, अिन प्रश्नोंका अुत्तर देती है।
४. गीताका सन्देश कीमत ०.३० डा खर्च ० १३	गीताके महत्त्व और अुसके सन्देश, केन्द्रीय शिक्षा, की चर्चा करती है।
५. विश्वशान्तिका अहिंसक मार्ग कीमत ०.४० डा. खर्च ०.१३	युद्धोंके अन्तका और स्थायी शांतिका अहिंसक मार्ग बताती है।
६. सहकारी खेती कीमत ०.२० डा. खर्च ०.१३	सहकारी खेतीकी जरूरत, अुसकी पद्धति और अुसके लाभ बताती है।

नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद–१४

बापूके पत्र – १ : आश्रमकी बहनोंको

गाधीजीके अक्षर-शरीरका अेक बड़ा भाग अुनके प्रेमोपदेश् गगा बहानेवाले असख्य पत्र है। प्रस्तुत पत्र गाधीजीने साबर(आश्रमकी बहनोको लिखे थे। अिनमें अुन्होने तीन बातो पर जोर दि है: १. सामाजिक जीवनका महत्त्व, २. शिक्षाका अर्थ चरित्र-नि और जीवनकी दृष्टिसे आवश्यक कौशलकी प्राप्ति, तथा ३. शरीर- अुद्योग-परायणता, सादगी और सयमके प्रति निष्ठा।

कीमत १.२५ डाकखर्च ०.३१

सयानी कन्यासे

लेखक नरहरि परीख; अनु० काशिनाथ त्रिवेदी

तारुण्यमें प्रवेश करनेवाली कन्याओके मनमें जो जो प्रश्न अुठते हैं, अुनके विषयमें लेखकने अपनी पुत्रीको ये पत्र लिखे हैं। अिस पुस्तकमें गाधीजीके तत्सम्बन्धी दो पत्रोंका तथा श्री काकासाहबके अेक लेखका भी समावेश किया गया है।

कीमत १.०० डाकखर्च ०.२५

स्त्रियां और अुनकी समस्याअें

लेखक : गांधीजी; सपादक : भारतन् कुमारप्पा

गाधीजीका मत था कि जब तक राष्ट्रकी जननी-स्वरूप देशकी स्त्रिया शिक्षित और स्वतत्र नही बनती तथा अुनसे सम्बन्धित कानूनों, रीति-रिवाजो और पुरानी रूढ़ियोंमें अनुकूल परिवर्तन नही होता, तब तक हमारा राष्ट्र आगे नही बढ़ सकता। अिन्ही बातोंकी चर्चा अिस पुस्तकमें हुअी है और स्त्रियोंकी प्रगतिमें बाधक बननेवाली समस्याओंके हलका सच्चा मार्ग बताया गया है।

कीमत १.०० डाकखर्च ०.१९